वर्ष 3, अंक 4, अप्रैल 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका मूल्य मात्र 3/ रुपये

वर्ष 3, अंक 4, मार्च 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका
मूल्य मात्र: तीन रुपये

विश्व स्नेह समाज

क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति बेकार है?

चार कहानियाँ

अमेरिका ने क्या दिया ईराकी जनता को?

जिन्ना नहीं चाहते थे

राष्ट्रीय अन्धता नियंत्रण कार्यक्रम

- 6मीटर (20 फुट) की दूरी से अंगुलियॉ न गिन पाना दृष्टिहीनता कहलाती है।
- जिला अन्धता निवारण समिति के द्वारा जनपद के समस्त सामुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर नेत्र शिविर लगाकर अन्धेपन एवं मोतिया बिन्द का आपरेशन निःशुल्क किया जाता है।
- आपरेशन के पश्चात सभी लाभार्थियों को निःशुल्क दवायें एवं चश्मा दिया जाता है।
- 8 से 14 वर्ष की आयु के स्कूली बच्चों का नेत्र परीक्षण कराकर दृष्टिदोष से पीड़ित गरीब छात्रों को निःशुल्क चश्मा प्रदान किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए निकटतम स्वास्थ्य केन्द्र जिला चिकित्सालय से सम्पर्क करें।

डा0 एस0सी0श्रीवास्तव
(कार्यक्रम प्रबन्धक)
जिला अन्धता नियंत्रण समिति
इलाहाबाद।

एस0पी0 गोयल
जिलाधिकारी,
इलाहाबाद

U.P.T.T AD. 0177803 Dt. 1-4-84
C.S.T. AD. 5119517 Dt. 21-9-89

Sayeed Absar Bidi Works

Head Office :
255, Tulsipur, Allahabad. Phones (Off.)658497, 659355, 451417
Branch Office :
Ghoorpur, Phoolpur-51271, Bandhwa Kalan (Sultanpur) Ph.: 262226 Anjana

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

स्नेहागन कला केन्द्र

शाखा : 1. एल.आई.जी. 93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
2. एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

0 सिलाई 0 कढ़ाई 0 पेंटिंग 0 कम्प्यूटर 0 ब्यूटिशियन 0 इंग्लिश स्पोकेन
ovU;izkQsluydksIZsl,oaO;okf.kdksIZsl

नोटः हमारे यहॉ अनुभवी अध्यापको द्वारा ट्रेनिंग की व्यवस्था है। ट्रैनिंग के उपरान्त प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाता है।

आदर्श शिक्षा निकेतन जूनियर हाई स्कूल

गीत गंगा संगीतालय   कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र

समय : सायं 4 से 6 बजे तक

विषयः गायन, वादन,नृत्य अभिनय

यहॉ पर इंटरनेट एवं प्रिटिंग, टाइपिंग और कुण्डली बनवाने की सुविधा है।

प्रधानाचार्य
एम.डी.पाठक

पताः 67 बक्शी कला, दारागंज, इलाहाबाद

प्रबंधक
डॉ. एस.के. पाठक

उत्तम शिक्षा   उचित व्यवस्था   ☎2501999

शक्ति विद्या निकेतन

जूनियर हाई स्कूल

श्री बच्चा लाल, मास्टर जी, पुरानी झूँसी, इलाहाबाद

1 जुलाई 2003 से प्रवेश आरम्भ, प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक

- शूल्क 40/–रू0 प्रति माह प्रति छात्र
- अनुभवी एवम् योग्य शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षण कार्य
- छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए उचित शिक्षण व्यवस्था
- दाई द्वारा छात्रों को विद्यालय लाने व पहुँचाने की उचित व्यवस्था

नोटः इंग्लिश और गणित अध्यापिका की जगह खाली है।

संस्थापिका
श्रीमती एम.डी.पाठक

प्रवेश प्रारम्भ   प्रवेश प्रारम्भ   प्रवेश प्रारम्भ

सरस्वती योगीराज इंटर कॉलेज

पताः बोगवा गली, जेल चौराहा, प्रथम गली से, नैनी, इलाहाबाद

कक्षा : केजी. से 12 तक

प्रबंधक
राजकुमार गुप्ता

१५ जून से प्रवेश प्रारम्भ है।

प्रधानाचार्या
श्रीमती एम.सिंह

संस्थापित :1987   उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त   ☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक/बालिकाओं)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

२५ जून से प्रवेश प्रारम्भ है।

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

☎2655061

चेतना इंटरमीडिएट कॉलेज

करैली, इलाहाबाद

कक्षा : के.जी. से 12 तक (विज्ञान, कामर्स एवं कला वर्ग)

(बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग–2 भवनों की व्यवस्था)

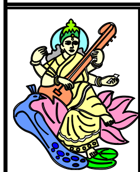

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎2699180

शुभम शिक्षा निकेतन इण्टरमिडिएट कॉलेज

कक्षा : के.जी. से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

बालक / बालिकाए।

प्रबंधक
रमाकांत मिश्र
(एम.काम)

पताः शिव नगर, नैनी, इलाहाबाद

प्रधानाचार्या
दयाशंकर मिश्रा
(एम.ए.एल.एल.बी)

गुप्त रोगों का सफल ईलाज

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोग

+ हकीम एम0शमीम +

SC. UM(CAL) Reg.

होटल समीरा
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन
इलाहाबाद

मिलने का समयः
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9 से रात्रि 8 बजे तक।

श्री गणेश ट्रेवल एजेन्सी

. सभी ट्रेनों में आरक्षण कराने की सुविधा
. हवाई जहाज के नये टिकट बुक कराने की सुविधा।
. डाक टिकट एवं डाक स्टेशनरी सरकारी दरों पर उपलब्ध

पताः 22, जलकल काम्पलेक्स, न्यू कॉलोनी, देवरिया–274001
☎(05568)225870, 229411

फोन न0: 311887

कमल बैट्रीज

प्रेमनगर, कुण्डा, प्रतापगढ़

हमारे यहॉ इनवर्टर, बैट्री, चार्जर, इमरजेंसी लाइट, स्टेपलाइजर आदि कुशल कारीगरों के द्वारा बनाकर गारन्टी के साथ उचित मूल्य पर दिये जाते हैं।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रो0 बबलू विश्वकर्मा

ऐक्सेल पॉली क्लीनिक

डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

(B.E.H.S) RNo- D3947

क्या आप शुगर, लिकोरिया, चर्म, पेट रोग के मरीज है?

100% गारण्टी के साथ मिले।

कोई साइड इफेक्ट नहीं।

स्थान : 196B/2K, प्रियदर्शनी नगर, आदर्श नगर काली मंदिर के पास, नयापुरा, करैली, इलाहाबाद
फोन ☎ : 0532-2616634

सम्पादकीय

वर्ष : 3, अंक 7, जुलाई 2003

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्नेह समाज

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

संयुक्त संपादक

मधुकर मिश्रा

सहायक संपादक

0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

सलाहकार संपादक

नवलाख अहमद सिद्दीकी

साहित्यसंपादक :

डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय

ब्युरो :

गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)
ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)
सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)
अजय कुमार विश्वकर्मा'यशस्वी(प्रतापगढ़)
इन्द्रहास पाण्डेय (गुजरात)
जागृति नगरिया (सामा0 व्यूरो, इला0)

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस,** बाई का बाग, इलाहाबाद, से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : 8380/2001

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें:

पापुलर बुक डिपों,

इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

विद्यार्थी बुक सेन्टर

चक भटाही, नैनी, इलाहाबाद

रवि स्टेशनर्स

कालिन्दीपुरम पुलिस चौकी के पास, कालिन्दीपुरम, राजरूपपुर, इलाहाबाद

प्रिय पाठक मित्रों,

नमस्कार

आपके अमूल्य सुझाव 'विश्व स्नेह समाज' के वर्तमान को सुरूचि पूर्ण एवं सघनता से निखारते जा रहे हैं। हमें आशा है पत्रिका का निकट भविष्य भी परिमल एवं समुन्नत होगा। आपकी प्रतिक्रियायें ही हमारा सम्बल हैं। आज यह प्रकाशन के तृतीय वर्ष को पार कर चुकी है निर्विघ्न। तमाम जटिलतायें, व्यवधान आये किन्तु पत्रिका अस्वस्थ नहीं हुई, निरन्तर इसे आपका स्नेह निर्झर अमृत पाथेय देता रहा जिसका पत्रिका परिवार हृदय से ऋणी है।

मित्रों आज से हम एक संकल्प स्वयं ले एवं अपने आस पास के लोगों को भी प्रेरित करें कि हम व्यस्त एवं किसी कार्य के पूर्ण होने तक सतत् प्रयासरत रहें। अपने गतव्य को पाने की तलाश एवं तड़प हमारी आतंरिक ऊर्जा बढ़ायेगी। हमारे लक्ष्यों की अनगढ़ मूर्ति में निश्चय ही प्राण फूंकेगी, उसे साकार करेगी। मित्रों आप प्रकृति के स्वरूप उसके रहस्य के आवरण में झाकें तो आपकों पता चलेगा इसका श्रेय तो पृथ्वी को जाता है। जब सारे ग्रह नक्षत्र, सूर्य, चंद्र, मंगल, तारे विखरते, टूटते, चलतें, थक गये तो अपनी अपनी कक्षाओं में संतुष्ट होकर अवस्थित हो गये, किंतु पृथ्वी बेचैन रही यह निरन्तर घूमती रही अनवरत व्यस्त। इस सक्रियता का फल यह हुआ कि धरती जल, झरने, वृक्ष जीवन का कोलाहल एवं विस्तार प्रकृति की मनोरम छटा, अपनी छाती पर उगाये। ग्रह तो अब भी उसी स्थिति में जैसे पहले थें पड़े हैं शून्य निर्जीव, अचेतन, पृथ्वी चुम्बकीय आर्कषण से भरपूर, अर्वाचीन एवं प्राचीन सुविधा सम्पन्न, अति आधुनिक। विशाल, सुखद सरल।

'जार्ज बनार्ड शा ने कहा है –दुःखी रहने का सीधा मार्ग वह है कि आप इस चिन्ता में पड़ जाये कि मैं प्रसन्न हूँ या दुखी। अतः अहित कर चिंतन के लिए मन को ढीला अकर्मण्य छोड़ देना हानिकर है। हम कार्य में व्यस्त रहें।

ओसा जौन्सन्स कहते है– मुझे संसार की कर्म स्थली के कार्य में निमग्न हो जाना चाहिये अन्यथा मैं निराश या चिन्ता में घुल जाऊंगा। 'खाली मन शैतान का घर' व्यस्त रहे, खाली रह कर गड़े मुर्दे उखाड़ना, दुखद प्रसंग उठाना, हमारे जीवन को दुष्कर कर हमें हमारे ही जीवन का खच्चर बना देता है। धरती आज भी निरंतर चल रही है बिना थके। और चहचहाते परिंदे, मुस्कुराते लोग, वृक्ष लहराती पत्तियां भी है, तो कहीं ठूढ़ सूखा, मौत, आतंक की चीख भी है, किंतु वह कर्मठता भी प्रतिभूति सी अपरिग्रही अपराजेय है।

हमें आपके पत्र नियमित प्राप्त होते हैं। आपके सुझाव एवं शंकायें अद्वितीय है। भविष्य में भी आशा है इसी प्रकार सहयोग देते रहेंगे। आपकी प्रतिक्रियायें हमारी शक्ति हैं। यह अंक आपकों कैसा लगा आपके पत्रों की प्रतीक्षा के साथ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।

कुसुमलता मिश्रा 'सरल'
कार्यकारी संपादिका

पत्र व्यवहार का पता : एल.आई.जी.–93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद मो0: 3155949 फैक्स सं0 : 0532–655565,
इलाहाबाद कार्यालय : एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुरसा, इलाहाबाद ☎2552444
लखनऊ ऑफिस : 280/28, ऊषा भवन, मवैया, कानपुर रोड, लखनऊ ☎ (0522)-205410
देवरिया ऑफिसः आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नगर, भुजौली कॉलोनी, देवरिया ☎(05568)25085

मेरी कुर्सी को कोई खतरा नहीं है: सुश्री मायावती

0 चूँकि यह सरकार मेरे समर्थन से बनी थी और मैंने समर्थन वापस ले लिया है, इसलिए यह अल्पमत में आ गयी है और इसे बर्खाश्त किया जाना चाहिए?

0 हमने वैकल्पिक सरकार की व्यवस्था भी कर ली है। **गिरिराज दूबे एवं अजय विश्वकर्मा की एक रिपोर्ट**

लोकदल के अध्यक्ष चौधरी अजित सिंह के केन्द्रीय मंत्रीमंडल से 24 मई को निष्कासन के बाद उत्तर प्रदेश में राजनीतिक हलचल फिर एक बार तेज हो गयी। इस हलचल में जोरदार उफान तब आया जब राष्ट्रीय लोकदल ने उत्तर–प्रदेश में सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया।

कमरों में बंद विपक्ष के नेता वार्तालाप में जूट गये। टी.वी.चैनल, समाचार पत्र खबर पाने को बेताब खड़ेथे। विपक्षी दल मायावती सरकार को हटाने की मांग करने के लिए मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में राजभवन की ओर चल पड़े। राजभवन में मुलाकात के बाद संवाददाता सम्मेलन की भी व्यवस्था कर ली गई। 30 मई की शाम को इस नाटक का पटाक्षेप हो गया और सत्तारूढ़ गठबंधन ज्यों का त्यों बरकरार है।

इस मुहिम में समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष मुलायम सिंह यादव, जिन पर मायावती सरकार ने 137 मामले दायर कर रखे है, उसे गिराकर कुर्सी पर बैठने को बेताब थे। उन्होंने न केवल अजित सिंह से भेंट की बल्कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से भी समर्थन मांगा और इस बार सोनिया गांधी ने सकारात्मक कदम उठाते हुए उत्तर प्रदेश के प्रभारी नवल किशोर शर्मा को भेजकर समर्थन का वादा किया।

30 मई की शाम पूरा विपक्ष एक मंच पर था। मुलायम सिंह यादव ने नवल किशोर शर्मा और राक्रांपा के अध्यक्ष कल्याण सिंह के साथ बैठक की। दूसरी तरफ राष्ट्रीय लोकदल के नेता चौ0 अजीत सिंह ने पार्टी नेताओं से मिलने के बाद सपा महासचिव अमर सिंह, शर्मा और दूसरे नेताओं को साथ लेकर राज्यपाल के पास पहुँचे और मायावती की अल्पमत सरकार को वरखास्त करने मांग की। अजित सिंह का तर्क था, "चूँकि यह सरकार मेरे समर्थन से बनी थी और मैंने समर्थन वापस ले लिया है, इसलिए यह अल्पमत में आ गई है और इसे बर्खास्त किया जाना चाहिए।"

किंतु लम्बें चौड़े वादों और दावों के ताबड़तोड़ राजनैतिक सरगर्मी के बावजूद अल्पमत सरकार बर्खाष्त नहीं की गई। उसका कारण था कि मायावती सरकार अभी भी मजबूत स्थिति में हैं। 402 सदस्यीय सदन में उनके पक्ष में 211 विधायक है, तो 187 विपक्ष में। अजित सिंह शायद यह भूल गये हैं कि सरकार के गठन के समय उनका समर्थन मायावती सरकार के गठन के समय उनका समर्थन मायावती सरकार के लिए अहम था, लेकिन साल भर बाद सुश्री मायावती ने निर्दलियों, कांग्रेस तथा अपना दल में फूट डालकर 20 अतिरिक्त विधायक जुटा लिए। विपक्ष ने यदि एक–दो निर्दलिय विधायकों को

साथ ले लिया होता तो उनका दावा शायद कुछ मजबूत होता। लेकिन अजित सिंह तो बस अपने अपमान का बदला लेने की जल्दी में थे, इसलिए उनका गणित कारगर साबित नहीं हुआ। भाजपा विधानमंडल दल के नेता और सुश्री मायावती के धर्मभाई लालजी टंडन द्वारा दिए गये बयान–"यदि सरकार गिरती है तो राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया जाएगा।" के बयान से विपक्ष को थोड़ा मौका मिला। सपा नेता अमर सिंह ने तो यहां तक कह दिया कि लालजी टंडन के इस बयान से साफ है कि सरकार अल्पमत में आ गई है। उन्होंने आगे कहा कि किसानों के हित की बात करने के कारण ही अजित सिंह से हटाया गया है। रालोद के विधायकों को प्रदेश के बाहर रक्खे जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि–विधायक अपनी मर्जी से गर्मी की छुट्टिया बितानें गए हैं।

पूर्व योजना के मुताबिक पूरे विपक्ष को राजभवन जाकर राज्यपाल से सरकार को बर्खास्त करने की मांग करना था। लेकिन दोपहर तक मुलायम सिंह और कल्याण सिंह अपने तय कार्यक्रमों के लिए निकल पड़े। क्योंकि उन्हें पता चल गया था कि मायावती सरकार गिराने का दूसरा प्रयास भी बेकार हो जाएगा। विपक्ष के एक वरिष्ठ कार्यकता का कहना था कि "कोई भी निर्दलीय विधायक मायावती सरकार के खिलाफ नहीं जाएगा क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं जेल की हवा न खानी पड़े।" उसके अनुसार, निर्दलीय विधायकों और छोटे दलों में असंतोष भले ही है, लेकिन उन्हें डर है कि यदि विपक्ष की रणनीति नाकाम रही तो उनका हश्र भी वहीं होगा जो निर्दलीय विधायक राजा भैया का हो रहा है। उ0प्र0 की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती 15 दिन के विदेश दौरे पर है। उनका कहना है कि–"मेरी सरकार को कोई खतरा नही है।" उसके बावजूद वे पल–पल की खबर रख रही है। रालोद के विधायकों के खिलाफ आपराधिक रिकार्ड जुटाया जाने लगा है।

अपने विधायकों को एक जुट रखने के लिए जिस तरह से अजित सिंह एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाये जा रहे हैं, उससे यह साबित हो रहा है, उनकी पकड़ अपने विधायकों पर बहुत मजबूत नहीं रह गयी है। किंतु अजित सिंह ने मायावती सरकार को गिराने के लिए अपने घूर विरोधी मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया है। मायावती सरकार हालांकि तात्कालिक रूप से जाने से रही, लेकिन इससे एक फायदा हुआ कि पूरा विपक्ष एक नजर आने लगा है। तीन सिंहों–अजित, मुलायम और कल्याण ने एक जुटता दिखाई और कांग्रेस का समर्थन का समर्थन मिलने से बृहद विपक्षी गठबंधन उभरा, जो आज नहीं कल भाजपा–बसपा गठबंधन के लिए खतरा बन सकता है। सिर्फ भौगोलिक दृष्टि से हीं नहीं बल्कि जातीय समीकरण के हिसाब से भी। तीनों सिंह जाट, यादव और लोद के निर्विवाद नेता है। अगर यह गठबंधन अगले लोकसभा चुनाव तक कायम रहा तो एक नया गुल खिला सकता है।

कार्टून की डायरीः

लगता है कुर्सी बहुत मजबूत है। इसको फिलहाल हिलाना बहुत मुश्किल काम है : विपक्ष

लगता है फेबीकोल का जोड़ है।

मिसाईल पुरूष की अनोखी यात्रा

एक कहावत है कि बिहार में इतिहास के सिवा कुछ भी नहीं है। मिसाइल पुरूष डॉ0 ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का चुन–चुनकर ऐतिहासिक स्थलों पर जाना शायद इसी कहावत के परिप्रेक्ष्य में था। मसलन बोधगया, नालंदा, पावापुरी, पटना के संग्रहालय, खुदाबख्श लाइब्रेरी, तख्ता हरमंदिर। डॉ0 कलॉम को ऐसा लगा कि बिहार के पास भूत के साथ भविष्य भी है। एक रिपोर्ट– पटना ब्यूरो।

महामहिम की अनोखी यात्रा 29 मई की रात पटना पहुंची तो वहां उपस्थिति प्रत्येक व्यक्ति राजनीति से दूर भाग रहा था। मुख्यमंत्री राबड़ी देवी ने अपने सहयोगियों के साथ महामहिम का स्वागत किया साथ ही बिहार के राज्यपाल विनोद चंद्र पांडेय और रेल मंत्री नीतिश कुमार। महामहिम के पटना पधारने मात्र से विकास के नाम पर घर, रिश्तेदार एवं जाति का विकास करने वाली माननीया राबड़ी देवी के चेहरे पर जनविकास की चिंता पहली बार दिखी। "सब नाश कर दिया रे।" कुछ छायाकारों द्वारा सुरक्षा व्यवस्था की पोल खोलते हुए धक्का मुक्की करने पर राबड़ी देवी यह प्रतिक्रिया शायद यह संकेत दे रही है कि वे अब बिहार के लिए कुछ करना चाहती है।

राष्ट्रपति महोदय अपने साथ पांच सदस्यीय एक विशेषज्ञ टीम भी लाये थे। उन्हें बिहार के केंद्र से सहयोग व विकास करने के बारे में जानकारी करने के लिए लाया गया था। राज्य के अधिकारियों से इसके लिए कहा भी गया। राबड़ी देवी ने राष्ट्रपति महोदय से उनके सुझावों पर अमल करने का वादा भी किया। महामहिम ने बिहार के विकास के लिए अपनी विशिष्ट सेवाएं देने की बात भी की।

पटना के आसपास के लोगों के लिए महामहिम की यह यात्रा एक ऐतिहासिक घटना थी। हरनौत से पटना का एक घंटे का सफर राष्ट्रपति महोदय ने प्रेसिडेंशियल कोंच में किया जिसमें अंग्रेज वॉयसराय सफर करते थे। दुलहन की तरह सजी इस विशिष्ट कोच में महामहिम कलाम की आवश्यकता की प्रत्येक चीज उपलब्ध थी। खूबसूरत व मनमोहक लकड़ी के पैनल से बने इस इस कोच की शाही क्रॉकरी भी लगभग 60 साल पुरानी है।

राष्ट्रपति महोदय ने हरनौत में रेलवे कोच मरम्मत कारखाना का शिलान्यास कर बिहार को नई ऊंचाई प्रदान करते हुए कहा ' हरनौत में कारखाना खोलना रेलवे का महत्वपूर्ण कदम है। रेलवे और बिहार के लिए यह बहुत बड़ा काम है। महामहिम ने आगे कहा–'अगर भारत को सफल होना है तो बिहार को समृद्ध बनाना होगा।' राबड़ी देवी के यह कहने पर कि–'बिहार के साथ केंद्र का सौतेला व्यवहार होता रहा है, उचित न्याय के लिए बिहार की मदद कीजिए।' पर राष्ट्रपति महोदय ने कहा –'रोना–धोना छोड़िए और कृषि, पर्यटन और शिक्षा के क्षेत्र के लिए 10 साल की योजना बनाकर उस पर अमल कीजिए। कौन रोक सकता है बिहार को आगे बढ़ने से।'

इस यात्रा के पूर्व भी 28 अक्टूबर 2000 को प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में पालीगंज आए थे। उस समय कुछ लोगों ने उनसे कहा था कि 'बिहार में कुछ नहीं हो सकता।' पर अपने अनुभवों से खुश दिखाई दे रहे कलाम ने कहा,'पालीगंज ने फसल की पैदावार दोगुनी करके यह साबित कर दिया है कि बिहार बहुत आगे जा सकता है।'

राष्ट्रपति अपनी त्रिदिवसीय अनोखी यात्रा में बिहार को समझा और लोगों को समझाया। शायद बिहार को अब कोई नया रास्ता मिले और उनकी सलाह मानकर सरकार रोना–धोना छोड़कर अपने बलबूते पर बिहार को विकास के मार्ग पर ले चले। राष्ट्रपति को उम्मीद है कि बिहार बदलेगा। मगर इसके लिए राबड़ी–लाल सरकार और उनके अधिकारियों को अपना नजरिया और काम करने का तौर–तरीका भी बदलना होगा।

बिजली की मार से किसानों और उद्योगों जर्जर हालत

✍जी0के0द्विवेदी

एक तरफ जहॉ हम परमाणु बम और विभिन्न प्रकार के उपग्रहों के प्रक्षेपण की खुशियां मना रहे है तो दूसरी तरफ बिजली और पानी से त्रस्त है इस देश अधिकतम आबादी वाला किसान। उसे खेत की सिचाई करने को पानी तक नहीं मिलता। हफ्ते में अगर तीन–चार घंटे बिजली किसानों को मिल जाए तो यह उसके लिए सौभाग्य की बात होगी।

किसी भी देश अथवा राज्य की आत्मा किसान होते हैं लेकिन उन्हें भी हमारे देश में रोशनी और खेतों में सिचाईं के लिए बिजली नहीं मिल पा रही है। नहरों में पानी नहीं, माइनर सूख चुके है। ऐसे में खेतों में पानी पहुंचाने का एक मात्र साधन है नलकूप और ट्यूबेल। मड़ाई कार्य और थ्रेसर कैसें चलें। इसकी आवश्यकता है कि किसानों को कम से 16 घंटें बिजली की आपूर्ति की जाए लेकिन मिलती 6 घंटे भी नहीं है। जिस देश की सत्तर प्रतिशत आबादी गांवो में निवास करती है, जिनके माध्यम से लोगों को अनाज मिलता है उन्हें ही बिजली नहीं मिल पा रही है। ऐसा कौन किसान है जो 25 रूपये लीटर डीजल खरीद कर खेंतों में अन्न का उत्पादन करेगा। अगर उत्पादन करता भी है और किस दर से बेचेगा। बिजली की भारी खपत और कम वसूली को देखते हुए नये नलकूपों के कनेक्शन पर रोक लगा दी गयी है। और जो पूराने नलकूप है उनके कनेक्शन किसान खुद कटवा रहा है। जो है भी वे बिजली के अभाव में जर्जर हो रहे हैं।

पावर हाउस के कर्मचारी इस जर्जर व्यवस्थ ा के लिए अधिकारियों को दोषी मान रहे हैं तो अधिकारी कर्मचारियें और सरकार पर। आखिर इस आरोप–प्रत्यारोप से किसका भला होगा, कर्मचारियों, सरकार, किसान या देश का।

इसका खामियाजा किसान भुगत रहा है। अनाजों के उत्पादन दिन–प्रतिदिन घट रहे है। अवैध कनेक्शनों के कारण मड़ाई कार्य एवं अन्य कृषि कार्य भी प्रभावित हो रहे हैं।

बिजली की दुर्व्यवस्था के शिकार केवल किसान ही नहीं बल्कि उद्योग धंधे भी हो रहे है। दिन प्रतिदिन बढ़ती बेरोजगारी के कारण आदमी छोटे–मोटे उद्योग लगाकर कुछ काम चलाना चाहता है। लेकिन वे भी बिजली की दुर्व्यवस्था के शिकार हो बंद हो रहे हैं। तो कुछ बंद होने के कागार पर है।

इस समस्या की जड़ में असंवेदशील अधि ाकारियों की तैनाती तथा उचित नियोजन का अभाव है। सामान्य 4 से 6 घंटे कटौती के बावजूद लोकल फाल्टों पर शीघ्रता से अमल न किये जाने की समस्या ने सिथिति को और नाजुक बना दिया है।

महानगरों में 20 घंटे बिद्युत आपूर्ति किये जाने के राज्य सरकार के आदेश के बावजूद पावर कार्पोरेशन के स्थानीय अधि ाकारियें की तुगलकी नीतियों एवं बदइंतजामी के चलते उपभोक्ता इस भीषड़ गर्मी में भी बिजली की मार झेल रहे हैं।

इसके लिए जरूरी है स्थानीय अधिकारियें के साथ ही साथ जनता को जागरूक होना पड़ेगा। उपभोक्ताओं को भी अपने मुहल्ले व आसपास के लोगों को कटिया लगाने के लिए रोकने का प्रयास करना होगा। जब तक स्थानीय लोग और अधिकारियों का तालमेल नहीं बैठेगा, उपभोक्ता जागरूक नहीं होगा बिजली की मार से बच पाना मुश्किल काम होगा।

शहरों के अनेक मुहल्लों में कटियामारी का जाल बिछा रात तो रात है दिन में भी देखा जा सकता है। इसमें कतिपय विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों की या तो मिलीभगत रहती है अथवा वे जानबुझकर चुप्पी साधे रहते है। कटियामारी का विद्युत आपूर्ति पर बहुत ही बूरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी भी घटनाएं प्रकाश में अक्सर आती रहती है कि विभाग के कुछ कर्मचारी अथवा दलाल कटिया मारकर बिजली की चोरी करने वालों से बाकायदा मासिक वसूली करते हैं जिसका कुछ हिस्सा अधिकारियों तक पहुँचाया जाता है।

बिजली की आपूर्ति में लो वोल्टेज भी एक समस्या हैं। जिस पर अधिकारी ध्यान ही नहीं देते। बहुत भाग दौड़ के बाद यदि किसी तरह लो वोल्टेज की समस्या से दूर भी किया गया तो जर्जर तारों के चलते कुछ ही दिन में पुनः यह समस्या आ जाती है। पुरानें शहरों में विद्युत आपूर्ति के लिए खींचे गये तार बहुत पुराने हो गये हैं। जिससे वोल्टेज बढ़ने अथवा कटियामारी करने पर वे टूटकर गिरते रहते है, परिणामस्वरूप दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।

बिजली की समस्या का एक और कारण स्वीकृत भार से अधिक बिजली की खपत तथा पीक आवर्स में उद्योगों का चलना बताया जाता है। स्वीकृत कम भार में अपने घरों में तीन–तीन चार–चार कूलरों का चलना भी सामान्य विद्युत सप्लाई में बाधक है।

इस बारें में अधिकारी से पूछने पर

क्या होगा बिजली विभाग के प्राईवेटीकरण का भविष्य

1. एक तरफ जहॉ हम परमाणु बम और विभिन्न प्रकार के उपग्रहों के प्रक्षेपण की खुशियां मना रहे है तो दूसरी तरफ बिजली और पानी से त्रस्त है इस देश अधिकतम आबादी वाला किसान।

2. बिजली की जर्जर व्यवस्था और भ्रष्टचार को देखकर सरकार प्रयास कर रही है कि बिजली विभाग का प्राइवेटीकरण कर दिया जाए। इसकी मांग जनता भी कर रही है। खासकर शहरी जनता। लेकिन इसके दूरगामी परिणाम के बारे में कोई नहीं सोचता। जिन राज्यों बिजली का प्राईवेटीकरण कर दिया गया है वहां के किसान आत्महत्या कर रहे है और जब किसान भूखों मरेगा, आत्महत्या करेगा तो शहरी जनता तो अपने आप मर जायेगी। उन्हें अन्न जो नहीं मिलेगा। प्राईवेट कंपनियां शायद शहरी बिजली व्यवस्था को एकबार मान लिया तो सुधार कर सकती है लेकिन उन्हें गांवो में कोई दिलचस्पी नहीं रह जाएगी। ऐसे में उत्तर प्रदेश में भी किसान भूखों मरेगें और आत्महत्या करने पर मजबूर होगें।

0 जिस विभाग में भ्रष्टचार और काम चोरी बढ़ती और वह घाटे में जाता है तो सरकार और जनता उसे प्राईवेट करने का प्रयास करने लगती है। विभागों में भ्रष्टाचार और कामचोरी बढ़ने पर निजीकरण कर दिया जाय। इसे उद्योगपति संभालेगे तो क्या जो सरकार निंकमी हो, जिस सरकार में भ्रष्टाचार बढ़ रहा हो उसका भी क्यों न निजीकरण कर दिया जाय। विधायिका को भी या तो उद्योगपतियों को सौंप दिया जाय या विदेशी ताकतों के हवाले कर दिया जाय ताकि विधायिका भी कार्यशील हो सके।

क्या होना चाहिएः–

0 कर्मचारियों की वेतन बृद्धि संबंधी हड़तालों को पूरी तरह गैर कानूनी घोषित कर दिया जाए।

0 वेतन बृद्धि का प्राईवेट कंपनियों की तरह कार्यप्रणाली के आधार पर कर दिया जाय। जिस कर्मचारी के कार्य क्षेत्र में कमी पायी जाये उसके वेतन पर रोक लगायी जाए।

0 भ्रष्टाचार और कामचोरी पर सख्ती से अंकुश लगाया जाए। इसके लिए सभी राजनीतिक दलों को कम कस लेनी चाहिए।

0 कटिया और अन्य तरीकों से बिजली चोरी पर अंकुश लगाने के लिए पूर्ण प्रयास किया जाय। इसके लिए कोई नई तकनीकि भी ईजात की जानी चाहिए।

0 अनावश्यक और काम चोर कर्मचारियों को हटा कर उनकी जगह पर नये कर्मचारियों खासकर युवाओं की भर्ती करनी चाहिए।

0 तकनीकि पदों पर से आरक्षण समाप्त कर देना चाहिए।

0 बिजली का निजीकरण न कर बल्कि कार्य कुशलता को बढ़ने का प्रयास किया जाना चाहिए।

उनका कहना है कि प्रशासनिक सहयोग न मिलने के कारण स्वीकृत से अधिक भार के प्रयोग तथा कटियामारी पर अंकुश नहीं लगा पाते हैं। लेकिन जनसामान्य की तो बात ही छोड़िए तमाम अधिकारियों द्वारा भी स्वीकृत भार से अधिक बिजली का उपभोग किया जाता है। बहुत से अधिकारियों के नाम पर तो कनेक्शन भी नहीं है, फिर भी वे धड़ल्ले से बिजली का उपभोग कर रहे है, जिन्हें रोकने की कूबत विभागीय अधिकारियों में नहीं है। बिजली के विभाग के कुछ अधिशासी अभियंताओं का कहना है कि प्रशासन के अधिकारी बिजली चोरी रोकने के लिए चलाए जाने वाले अभियानों से अक्सर भागते है। यदि प्रशासन पूर्ण सहयोग करें तो बिजली की आपूर्ति ब्यवस्था को सुधारा जा सकता है। मांग की तुलना में कम विद्युत उत्पादन भी एक मुख्य समस्या है। मुख्यमंत्री, बिजली मंत्री और प्रधानमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र में अनवरत बिजली सप्लाई दी जाती है वहां किसी की मजाल जो रोक दे।

बिजली विभाग के कर्मठ, ईमानदार एवं कार्यशील अधिशासी अभियंता मि0 चद्रशेखर सिंह, रामबाग डिवीजन का कहना है कि

0 1991 से बिजली का कोई उत्पादन नहीं बढ़ा है केवल खपत बढ़ी है। ऐसे व्यवस्था सुचारू कैसे हो सकती है।

0 बिजली विभाग में पहले 60 से 70 प्रतिशत के आसपास राजस्व की प्राप्ति होती है और अब 50 प्रतिशत भी मुश्किल से होती है।

0 बिजली के सुचारू रूप से संचालन के लिए उपभोक्ता को जागरूक होना चाहिए।

0 जिस प्रकार उपभोक्ता दुकान से सामान लाने व उसका हिसाब करने खुद ही जाता है उसी प्रकार उपभोक्ताओं को बिल नहीं पहुचने पर भी स्वयं बिल लेकर जमा करना चाहिए।

0 कर्मचारियें दिन–प्रतिदिन रिटायर होते जा रहे है लेकिन पिछले तीस सालों में कोई नयी भर्ती नहीं हुई है।

0

निर्जल होता भारत

✡ पानी की कमी सिर्फ शहरी समस्या नहीं है, ग्रामीण भारत में हालत और भी खराब है। जैसे–जैसे नदियां और तलहटियां सूख रही है, देश की खाद्य सुरक्षा को खतरा बन रहा हैं।

✡ 1980 के दशक में बढ़ती आबादी और घटते पानी के प्रथम लक्षण दिखने लगे थे। लेकिन अधिकांश शहरों को मात्र वर्तमान की चिंता है, भविष्य की चिंता भी नहीं।

आजादी के 53 वर्ष बीता जाने के बाद भी भारत में आज भी पीने का पानी तक सामान्य जन को उपलब्ध नहीं हुआ।

पानी की कमी सिर्फ शहरी समस्या नहीं है, ग्रामीण भारत में हालत और भी खराब है। जैसे–जैसे नदियां और तलहटियां सूख रही है, देश की खाद्य सुरक्षाा को खतरा बन रहा हैं। जल संसाधन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार 20 में से 8 नदी घाटी क्षेत्रों में पानी की कमी है, जिससे 20 करोड़ लोगों की जिंदगी और रोजी–रोटी को खतरा है।

तपता आकाश, झुलसती धरती, सूखता गला और उबलता खून हर बार गर्मियों में भारत की यही राम कहानी है। शहरी भारत पानी के लिए तड़प रहा है–बंगलूर में सप्ताह में दो दिन, भोपाल में रोजाना 30 मिनट, चेन्नई में 250 टैकरों को 2250 चक्कर काटने के पड़ते है। मुबंई, हैदराबाद, नई दिल्ली इन बड़ें शहरो का तो यह हाल है। छोटे शहरों और दूरदराज के गांवो का कितना बूरा हाल होगा। ग्रामीण भारत में न तो नल है और न टैंकर। 593 जिलों में से 206 में भूमिगत जल का स्तर बहुत नीचे पहुॅच चुका है।

इस समय भारत में सबसे बड़ा संकट पानी है। बड़े शहरों के आकड़े बताते है कि उनकी जरूरत के 1400 करोड़ लीटर में से उन्हे मात्र 1000 लीटर ही उपलब्ध होता है। पानी के लिए मार होते अक्सर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिल ही जाता है। शहरो में कोई पानी के लिए लड़ने के लिए जिम जाता है तो कोई नहाने के लिए अपने सुविधा सम्पन्न रिश्तेदारों के वहॉ तो कोई सरकारी ऑफिसों में जाकर अपनी नित्य क्रिया को सम्पन्न करता है।

जल संसाधन मंत्रालय के आकलन के अनुसार 2021 तक 35 बड़ो शहरों में पानी की मांग दोगुनी होकर 140.6 करोड़ घन लीटर तथा इनकी आबादी 20.20 करोड़ हो जाएगी। लेकिन पानी की मात्रा आज के बराबर ही रहेगी। जिससे पानी को लेकर युद्ध होना आम बात हो जाएगी। इसे कुछ लेखक तथा फिल्मकार भी इस पर नजर डालने लगे है।

1980 के दशक में बढ़ती आबादी और घटते पानी के प्रथम लक्षण दिखने लगे थे। लेकिन अधिकांश शहरों को मात्र वर्तमान की चिंता है, भविष्य की चिंता भी नहीं। दिल्ली 1250 टूयबेलों पर निर्भर है तो चेन्नई शहर के बाहर 250 किसानों के कुओं से। अब तो कई शहर 100 किलोमीटर दूर से पानी लाने को बाध्य है। दिल्ली शहर हरियाणा और उत्राचंल के ऊपर निर्भर हैं जबकि वह यमुना नदी के तट पर बसा है।

सरकार भी इससे अनजान नहीं है। केंद्रीय शहरी विकास मंत्री अंनत कुमार के अनुसार –हमें समस्या का पता है। हमने प्राथमिकता निर्धारित कर रखी है। पानी हमारे लिए रोटी, कपड़ा और मकान से ज्यादा महत्वपूर्ण है। वाजपेयी सरकार ने ग्रामीण जल योजनाओं पर 8500 करोड़ रूपये से ज्यादा खर्च किए है, जो अब तक की सर्वाधिक रकम है।

भारत में दुनिया की 2.45 प्रतिशत ध

ारती और ताजा के पानी के प्रतिशत स्रोत उपलब्ध है। भारत में हिमपात और वर्षा 4000 अरब घन मीटर होती है। जिससे 1864 अरब घन मीटर पानी आता है जिसमें से मात्र 690 अरब घन मीटर ही इस्तेमाल होता हैं शेष 1179 अरब घन मीटर भूजल और जोड़ दे तो 1122 अरब घन मीटर पानी की वास्तविक उपलब्धता का मतलब है एक अरब से ज्यादा आबादी वाले देश में हर व्यक्ति के लिए 1122 घन मीटर पानी उपलब्ध है।

ये ऑकड़े बताते है कि भारत में पानी की कमी नहीं होनी चाहिए। पर हकीकत में ऐसा नहीं है। वारिश 100 दिन की अवधि में लगभग 100 घंटे होती है जबकि पानी का प्रयोग 12 महीनें होता है। इसलिए हर साल 91 जिलों में सूखा पड़ता है तो 83 जिलें में बाढ़ की चपेट में आते है।

इसके समाधान के लिए जल भंडार बनाने पर जोर देना होगा। नदी घाटियों की गहराई बढ़ानी होगी। दीर्घकालिक समाधानों पर विचार करना होगा। जाहिर तौर पर अगर गंभीरता से इस समस्या को नहीं लिया गया तो पानी भी युद्ध करवायेगा।

निजात के सूत्र

1. बरसात के पानी की संचय की समुचित व्यवस्था की जाय।
2. पानी के संचय के लिए स्थानीय स्तर पर प्रबंधन टीम तैयार की जाय।
3. शहरों में भूजल के दोहन पर रोक लगाई जाय।
4. पानी के सारे स्रोत व कार्य किसी एक मंत्रालय के अधीन कर दिया जाए।
5. नहरों, तालाबों व नालों की खुदाई समय–समय पर कराते रहा जाय।

बावलियों का पानी इस्तेमाल होगा बागवानी में

राजधानी में ज्यों–ज्यों गर्मी बढ़ रही है, जलसंकट गहराता जा रहा है। दिल्ली प्रशासन यूं तो बार–बार कहता है कि पानी की एक–एक बूंद का महत्व है, पर संकट का हल हीं नहीं निकलता। उल्लेखनीय है कि दिल्ली में जल की मांग अनुमानित तौर पर 1800 मिलियन गैलन की ही हो पाती है। ऐसे में इस बार सरकारी एजेंसियों को यह कहा गया है कि बागवानी के लिए पानी के वैकल्पिक साधनों का इस्तेमाल बढ़ाया जाए।

दिल्ली जल बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का कहना है कि नई दिल्ली नगर परिषद, दिल्ली नगर निगम, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग और दिल्ली विकास प्राधिकरण से कहा गया है कि वे जल संरक्षण परियोजनाओं को अपनाएं। इसके तहत बागवानी के लिए तालाबों की खुदाई कराई जाए और कुओं को रिचार्ज भी किया जाए।

दरअसल, इस समय नई दिल्ली नगर परिषद क्षेत्र में पांच बावलियां हैं। ये नेहरू पार्क, तालकटोरा गार्डन, लोधी गार्डन, सत्य मार्ग और कौटिल्य मार्ग के आस–पास हैं। परिषद के हॉर्टिकल्चर विंग के एक अधिकारी ने बताया कि उनके यहां बागवानी के उद्देश्य से बावलियों का खूब प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, शहर में 14 स्थानों पर रेनवॉटर हार्वेस्टिंग प्रोजेक्ट्स की स्थापना की गई है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के अनुसार–भागीदारी योजना के तहत शुरू की गई रेनवॉटर हार्वेस्टिंग परियोजनाएं सफल हुई है। उनके अनुसार, बागवानी के लिए बावलियों और तालाबों का इस्तेमाल करने पर दिल्ली में मांग के अनुरूप जल की आपूर्ति पूरी की जाएगी। वैसे, यह तो आना वाला समय ही बताएगा कि इस दावें में कितनी सच्चाई है।

भारत मेंजल कृषि की अपार संभावनाएं मौजूद है

अनियंत्रित जनसंख्या और खेती के लिए कम होती कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक कठिन चुनौती बन गई है। भुखमरी और कुपोषण से लड़ने के लिए कृषि वैज्ञानिक अब जल कृषि की ओर देख रहे है। भारत में इसकी अपार संभावनाएं बताते हुए केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान के अनुसार–विकसित देशों ने अपनी जलीय संपदा का भरपूर उपयोग किया है, मगर हमारे यहां अब इसकी शुरूआत हो रही है।

जल कृषि की संभावनाओं पर काम कर रहें विशेषज्ञ कहते हैं कि मनुष्य को भविष्य का भोजन पानी से ही मिलेगा। जल कृषि में सर्वोच्च प्राथमिकता मत्स्य पालन पर है। विकसित देशों में लोग अपने आहार में 50 प्रतिशत तक जीव प्रोटीन का उपयोग करते हैं, वहीं हमारे देश में इसका उपयोग मात्र दो से तीन प्रतिशत तक ही है।

विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन ने भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार रहने के एक संदेश को भारत में कृषि वैज्ञानिकों को कहा है कि हमें नई सहस्राब्दि को भूख मुक्त बनाना होगा। इसके लिए आगामी 50 वर्षो तक खाद्यान्न उत्पादन में निरंतर बढ़ोत्तरी की दर रखनी होगी, क्योंकि विश्व जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है।

भारत के खाद्य एवं कृषि विशेषज्ञ इस बात से उत्साहित है कि हमारे पास समुद्री क्षेत्र, नदियों, जलाशय और तालाबों की अपार संपदा है। लेकिन दुर्भाग्य से इस क्षेत्र में अधिक काम नहीं हो सकता है। आजादी के दौरान हमारा मत्स्य उत्पादन बहुत कम केवल साढ़े सात लाख टन प्रतिवर्ष था। अब वह बढ़कर 54 लाख टन प्रतिवर्ष हो गया है। लेकिन, विशेषज्ञ इसे अपर्याप्त मानते है।

(साभार, जल विकास, त्रैमासिक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण)

डॉ० राजकुमारी शर्मा 'राज'

डॉ0 राजकुमारी शर्म 'राज' से मेरा परिचय कुछ वर्ष पहले विचित्र परिस्थितियों में हुआ। सन् 1993 में दक्षिण से अहमदाबाद लौटकर हिंदी साहित्य परिवार से जुड़ गया। फिर से लेखन और प्रकाशन प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इसी सिलसिले में मेरा तीसरा काव्य संग्रह 'अजुस' छपा जिसे मैंने समीक्षार्थ यू.एस.एम. पत्रिका में भेजा। कुछ दिनों पश्चात् मुझे पत्रिका की प्रति मिली जिसमें समीक्षा निकली थी और समीक्षक थीं डॉ. राजकुमारी शर्मा 'राज'। पढ़कर मन को अच्छा लगा। मेरी पुस्तक के साथ केवल औपचारिकता नहीं निभायाी गयी थी, बल मनोयोग उसे पढ़ा गया था। दूसरे ही दिन मुझे डा0 राजकुमारी शर्मा 'राज' का पत्र मिला जिसमें उन्होंने मेरे अन्य काव्य और गज़ल संग्रह तथा इतर साहित्य मुझसे मगाये थे और यह भी लिखा कि वे उसे खरीदना चाहेंगी। मुझे एक बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। हमारे साहित्य जगत में यह परम्परा तो है नहीं। मेरा अनुभव बिल्कुल इसके विपरीत था। मैं सोचने लगा कि यह उल्टी गंगा कैसे बहने लगी। अस्तु, पुस्तकें भेज दी गयी और मुझे उनका मूल्य भी मिल गया। कुछ समय बाद मेरे कहानी संग्रह त्रयोदशी तथा खण्ड काव्य 'करमैंदेवाय' की समीक्षायें भी की, जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। साथ ही मेरी गज़लों और नज़्मों को लेकर एक विस्तृत समीक्षात्मक आलेख भी लिखा जो गुर्जर राष्ट्रवीणा में प्रकाशित हुआ और जिसकी अच्छी प्रतिक्रियाएं मेरे पास आयी। इन सभी आलेखों को पढ़कर मुझे लगा कि उनमें नीर–क्षीर विवेक का गुण है, और समीक्षा की दिशा में उनके मान्य होने की पर्याप्त संभावनाए है।

इससे सम्बन्धित पत्र व्यवहार जो चला उसमें डॉ0 राज मुझे स्वरचित कुछ ग़ज़ले अवश्य भेज देती थी। इस प्रकार जब मैंने उनकी 20–25 गज़ले पढ़ी तो मैने देखा कि ग़ज़ल गोई का उनमें सहज गुण है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में भी उनी गज़ले पढ़ी और देखा कि शिल्प और कथ्य दोंनो ही हरिटयों में उनकी पकड़ बहुत मजबूत हैं उनके रदीफ़–क़ाफ़िये चुस्त दुरूस्त होते है और बहर में सही वज़न और रवानी होती है। आजकल के ग़ज़लकारों में यह कम देखने को मिलता है। हिन्दी ग़ज़ल के प्रचलन के साथ हिन्दी ग़ज़लकारों की एक बाढ़ सी आ गयी। लोगों ने इसे प्रयास का माध्यम बना लिया, जबकि ग़ज़ल एक बड़ी नाजुक विद्या है और आप इसके साथ खिलावाड़ नहीं कर सकते। फलस्वरूप इसके सौंदर्य में कमी आ गयी है। डा0 राज इन सबसे अलग है।

वहीं गुलाब खिले अज्मते मोहब्बत के,
वो क़तरा लहू का जहॉ निचोड़ गया।
(व्यञजना)

फूल महके जिस्म शाख़ें का लचिला हो गया।
रूत बदलते ही हर इक मंज़र नशीला हो गया।
धूप की शिद्दत संसारी बदलियॉ जब छट गयी
और गहरा आस्मां का रंग नीला हो गया।
सहले–दिल मैं याद की पुरवाइयॉ जब चल पड़ी,
नम हुई आंखें बरून सॉसों का गीला हो गयां

(विम्ब योजना)

राज की ग़ज़लों की सिर्फ़ तर्ज़े–बयानी ही ख़ूबसूरत नहीं है, उन्होंने कथ्य की दृष्टि से उसे व्यापक बनाया है। उनका इश्क का इज़हार भी परम्परा से हटकर है। इस दर्द को उन्होंने मानवीय–व्यापारों के अतिरिक्त प्रकृति के क्रिया–कलापों में भी महसूस किया है। साथ ही आम आदमी की जिंदगी से जोड़ा है। उनकी ग़ज़लों में एक ताज़गी है, जिसका मैं क़ायल हूॅ। पढ़ती भी बड़े तरन्नुम से है, यही वजह है कि ऑल इण्डिया स्वर के उर्दू मुशायरों में शिरकत के लिए उन्हें न्योता जाता है। यह एक फ़ख्र की बात है।

राजकुमारी जी की काव्य–प्रतिभा के अन्य उदाहरण मुझे उनके गीतों और दोहों में मिले। उनके सभी गीत एक अतृप्त आकांक्षा के वेदनामय गीत है, जिनमें छायांवदी अल्क देखने को मिलती है। पीड़ा उनकी चिर सहचारिणी है। भविष्य के स्वप्नों और प्रारम्भ की असफलताओं के बीच उनका मन डोलता रहता है। पर उनकी कल्पना उर्वर है और नए नए विम्बों और प्रतीकों के माध्यम से वे बहुत कुछ कह देती है– जैसे–

मेरे दिल का तुम्हारी चाह से संबंध हो जाए,
पक्षिक का जिस तरह पथ से स्वयं अनुबंध हो जाए।
जले हैं दीप ऑखों में सुनहरी आस्थाओं के
अकेले ही मगर मुझको कथा का भार ढ़ोना है
न चाहों तुम तो चाहत पर सफल प्रतिबन्ध हो जाए

यद्यपि आज ग़ज़लों के साथ साथ दोहों का प्रचलन भी बहुत हुआ है और जिसे देखो वहीं दोहें लिखता है और हर विषय पर लिखता है, पर सफल दोहे वे ही कहें जायेंगे जिनमें कबीर, तुलसी एवं बिहारी के दोहों के समान उक्ति–वैचिन्य अलंकार, एवं काव्य के अन्य तत्व हों। 'राज' के दोहों में यह बात सर्वत्र पायी जाती है। जैसे–

0स्वप्न थिरकते नैन में, सकल हाल बेहाल।
गोरी का मुखड़ा हुआ पिया की सुधि से लाल।।
0 पारस पत्थर ही तरह छूलें कोई देह।
चमके कुन्दन देह का, दमके दम–दम नेह।।
0सांसों में घुलने लगी मधुर माधुरी गंध।
ऑखों ऑखों में हुआ जीवन का अनुबंध।।

इन सबसे अलग डॉ0 राज का रूप एक अध्येता और शोधकर्ता का है। सहज विश्वास नहीं होता कि एक शायर और कवयित्री राम–चरित मानस का इतना गहन अध्ययन कर सकती है। ि

जब मैंने डा0 राजकुमारी 'राज' की साहित्य साधना के विविध आयामों को देखा तो मेरे सामने एक बहुमुखी प्रतिभा वाली महिला का चित्र सामने आया, जिन्होंने अपनी लगन, परिश्रम और एकांत साधना से साहित्य को योगदान दिया है और दे रहीं है। विशेषकर तब जब उनका मुख्य विषय संस्कृत है जिसमें वे पी. एच.डी. है और एक अनुस्नातकीय कॉलेज में रीडर भी।

अंततः अपने इस शेर से यहॉ समाप्त करूँगा–
'नियाज़' यूॅ तो चमन में हज़ार खिलते हैं।
मगर गुलाब हर इक फूल तो नहीं होता।।

0 izks0 Hkkxorizlkn feJ ^fu;kt^

वाजपेयी ने फिर बढ़ाया दोस्ती का हाथ....

देखें क्या गुल खिलाती है वाजपेयी की तीसरी दोस्ती

सत्यानन्द दूबे

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 18 अप्रैल को अपने दो दिवसीय श्रीनगर यात्रा के दौरान जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की बोली बोलते हुए कहा– "गोली से नहीं बोली से सुलझेगें मसले।" उन्होंने पाकिस्तान के साथ रिश्तों के बारे में कहा कि मैं दोस्ती और अमन पैगाम लेकर लाहौर गया था लेकिन इसके बदले कारगिल मिला। हमने हिम्मत नहीं हारी। इसके बाद हमने पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ को एक बार फिर अमन और दोस्ती का पैगाम देकर वार्ता के लिए आगरा बुलाया। लेकिन हमारी यह कोशिश भी विफल रही। मैं एक बार फिर दोस्ती का हाथ बढ़ाता हुं। लेकिन ताली एक हाथ से नहीं बजती। इसलिए शुरूआत दोनों तरफ से होनी चाहिए।"

प्रधानमंत्री वाजपेयी ने अपने कड़वे अनुभवों को दबाकर खुले दिल से दोस्ती का हाथ बढ़ाया, वहीं यह भी कहा कि अगर पाक सीमा पार से भारत में आतंकवादियों की घुसपैठ रोक दे, तो वह कल ही विदेश मंत्रालय से किसी अधिकारी को इस्लामावाद भेजकर बातचीत का एजेंडा तैयार करने के लिए कहेंगे। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री व विदेश मंत्री ने इस बयान का स्वागत किया है तो पाकिस्तान के राष्ट्रपति भी

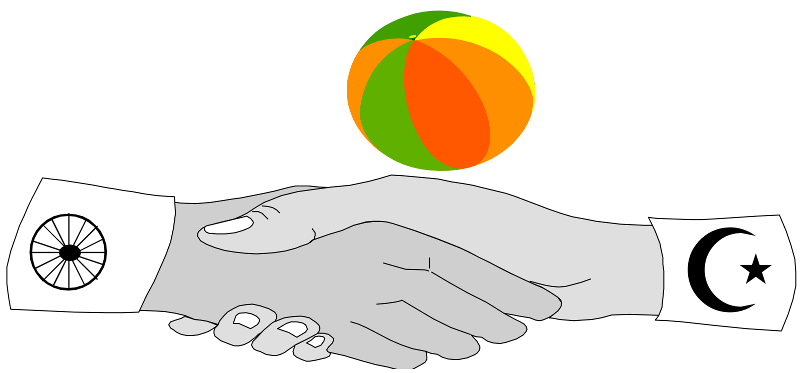

इससे सहमत दिखते है। पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान बातचीत के प्रति उत्साह तो दिखा रहा है, लेकिन वह घुसपैठ रोकने की बात को नजर अंदाज कर दे रहा है। भारत का जोर घुसपैठ रूकवाने पर है, लेकिन पाकिस्तान इस पर तैयार नजर नहीं आता।

प्रधानमंत्री वाजपेयी के इस बयान से दुनिया के उन देशों पर सकारात्मक असर पड़ेगा, जो पाकिस्तान के दुष्प्रचार के असर में बहने लगे थे। श्री वाजपेयी ने राजनयिक रणनीति के लचीलापन का संकेत देकर दूरदर्शिता का परिचय दिया है। प्रधानमंत्री के इस बयान से भारत के शांति का पक्षधर होने का पुख्ता प्रमाण मिलता है।

प्रधानमंत्री के इस नये वयान ने विदेशमंत्री यशवंत सिन्हा के उस भाषण को भी दर किनार कर दिया, जिसमें की सिन्हा ने पाक पर आक्रमण को फिर फिट केस बताया था और अमेरिका को भी चेतावनी दे डाली थी। विदेश मंत्री के इस वयान को रक्षामंत्री जार्ज फर्नाडिज ने भी उचित बताया था, जबकि सिन्हा का यह बयान भारत की विदेश नीति से मेल नहीं खाता था।

आम जन का यह विचार है कि वाजपेयी का पाक की ओर दोस्ती का हाथ बढाना अमेरिकी कूटनीति का तकाजा है। यह कुछ हद तक सही भी प्रतीत जान पड़ती है। अमेरिका और ब्रिटेन भारत–पाक के बीच बातचीत में ज्यादा रूचि दिखा रहे है। अगर यह रूचि सही दाव पर कायत रहती है तो इस संभावित बातचीत के अच्छे परिणाम निकल सकते है। इसी बीच अमेरिका के उप विदेशमंत्री रिचर्ड आर्मिटेज और दक्षिणी एशियाई मामलों की सहायक विदेशमंत्री क्रिस्टीना रोक्का भारत और पाक की यात्रा पर आ रहे है। यह उम्मीद की जा रही है वे दोनों भारत और

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े?

एक तरफ हमारे प्रधानमंत्री जहाँ अपनी "आतंकवाद का खात्मा किए हम पाकिस्तान से किसी भी प्रकार की बात नहीं करेंगे।" के वचन से मुकरते हुए पाकिस्तान की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे है वहीं पाकिस्तान ने सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता संभालने के तुरंत बाद एक कुटनीतिक चाल में कश्मीर मुद्दे पर बैठक बुलाने का फैसला कर लिया। हालांकि सुरक्षा परिषद यह जिम्मेदारी उसे एक नियम जिसके तहत प्रत्येक माह सदस्यों के बीच अध्यक्षता बारी–बारी से बदलती रहती है के तहत हासिल हुई है। लेकिन उसकी 13 मई को बैठक बुलाने की मंशा को नजरअंदाज करना लाजिमी नहीं होगा। पाकिस्तान के लिए यह कोई नयी बात नहीं है, वह सदियों से अन्तर्राष्ट्रीय मंचो पर कश्मीर मुद्दा उठाने का असफल प्रयास करता रहा है। जिसमें उसे हर जगह मुँहकी खानी पड़ी है। उसी तरह सुरक्षा परिषद में इस मुद्दे को उठाने का प्रयास करना उसकी कश्मीर मुद्दे के अन्तर्राष्ट्रीयकरण की चाल के सिवा कुछ नहीं लगता। अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा कश्मीर घाटी में आतंकवादी गतिविधियों को एक प्रायोजित घोषित करने के बाद भी, उसके कश्मीर के बारे में विचार भला किस देश को आश्वतस्त करेंगे।

लेकिन एक बात आजकल अलबत्ता अचंभित करने वाला है कि पाकिस्तान ने भी इन दिनों भारत के साथ बेहतर रिश्तों की ईच्छा जतायी है। पाकिस्तान के मुशर्रफ समर्थक व कठपुतली प्रधानमंत्री मीर जफरूल्ला खान जमाली ने हमारे प्रधानमंत्री के साथ बातचीत करने की पहल की है। जिससे मन में राम बगल में छूड़ी वाली कहावत चरितार्थ होती नजर आ रही है। इधर बातचीत की बात चल रही है और उधर कश्मीर घाटी में आतंकवादी गतिविधियों में ईजाफा हो गया है। एक तरफ जहाँ दोतरफा रिश्तों को मजबूती देने के लिए पाकिस्तान जोर देता दिखाई पड़ता है, वही दूसरी तरफ कश्मीर पर बैठक बुलाने की उसकी मंशा भारत पर बातचीत के लिए दबाव बनाने की सुनियोजित योजना लग रही है। वह जिस तरह से बेहतर रिश्तों को लेकर व्यग्रता दिखा रहा है उसे देखकर कौन कह सकता है कि यह छलावा नहीं है।

दरअसल भारत के प्रति उसकी यह मैत्रीपूर्ण मुद्रा अमेरिका उप विदेश मंत्री रिचर्ड आर्मिटेज को भ्रमित करे के लिए है, जो भारतीय उपहाद्वीप के दौरे पर आ रह हैं? आर्मिटेज के अमेरिका वापस लौटते ही पाकिस्तान अपना असली चेहरा खोलकर दिखा दें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। लेकिन एक बात तो तय ही है कि बातचीत के लिए दबाव बनाने की कुटिलता का परिचय देकर पाकिस्तान एक बार फिर अपना अहित करेगा। इतिहास के साक्ष्यों शिमला, लाहौर व आगरा को दरकिनार कर यही कामना व प्रयास होना चाहिए कि इस बार बातचीत किसी नतीजे पर पहुँचे।

पाकिस्तान पर बातचीत के लिए दबाव भी डालेंगे।

एक तरफ जहाँ बातचीत के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो रही है, वही दूसरी तरफ पाकिस्तान के सूचना मंत्री शेख अहमद रसीद अब दुष्प्रचार यात्रा में लगे हुए है। उनका कहना है कि उनकी सरकार के पास ऐसे प्रमाण है कि भारत सामूहिक विनाश के हथियार विकसित कर रहा है। उनकी जानकारी का स्रोत अमेरिका है, जिसे महीने भर खाक छानने के बाद भी सामूहिक संहार के हथियार ईराक में नहीं मिले। यदि अहमद रशीद भारत में अमेरिकी हस्तक्षेप के लिए इसे आधार बना रहे है, तो उन्हें समझ लेना चाहिए कि भारत, भारत है ईराक नहीं? इसमें गलती अहमद रसीद की नहीं बल्कि बूश प्रशासन की है कि जो भारत के पड़ोसी देशों में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रयासरत है। अभी हाल ही में नेपाली सेना के साथ अमेरिका सेना ने संयुक्त अभ्यास किया है। बांग्लादेश में एक दानदाता के रूप में वाशिंगटन की महत्वपूर्ण भूमिका है। श्रीलंका और लिट्टे से भी अमेरिका जूड़ा है। जहाँ तक पाकिस्तान की बात है वह तो एक तरह से अमेरिका का ही उपनिवेश है। वहाँ लगभग 20,000 अमेरिकी सैनिक अलकायदा के बचे–खुचे ढ़ाचे को नष्ट करने के नाम पर सक्रिय है। जनरल मुशर्रफ भारत में सीमा पार से आतंकवाद में पाकिस्तान का हाथ नहीं होने की बात करते हैं। वे सोचते है कि अमेरिका उनके पक्ष में है। लेकिन यह मुशर्रफ की भूल है। अमेरिका का स्वार्थ जिस दिन हटा वह दूसरा ईराक हो सकता है। इस संदर्भ में अमेरिका के भारत में पूर्व राजदूत रॉवर्ट ब्लैकविल का यह कथन कि "अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के विरूद्ध लड़ाई को तब तक नहीं जीता जा सकता, जब तक भारत के विरूद्ध आतंकवाद स्थायी रूप से समाप्त नहीं हो जाता।"

हकीकत चाहे जो भी हो लेकिन पाकिस्तान को यह समझ लेना चाहिए कि उसे भारत से दोस्ती में ही फायदा है। दुश्मनी का रास्ता उसे तबाही की ओर ही ले जाएगा। पाकिस्तान को इसके लिए सीमा पार से फैलाई जा रही दहशतगर्दी को हर हालत में समर्थन देना बंद करना होगा। भारत ने अपना काम कर दिया है अब गेंद पाकिस्तान (मुशर्रफ) के पाले मे जा गिरी है।

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
एम.ए., एम०सी०ए०
प्रकाशित रचनाएं- विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं में लेख, कविताएं प्रकाशित। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव, **सचिवः** जी.पी.एफ.सोसायटी, **प्रांतीय महासचिव** : राष्ट्रीय जनचेतना, उ०प्र० **प्रकाशनाधीनः** लघुउपन्यास 'रोड इन्सपेक्टर एवं उपन्यास 'दिल का पैगाम', कविताएं 'यमुनापार के कवि'
सम्पर्क सूत्रः एल.आई.जी. ६३, नीम सराय, कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **बातचीतः**3155949, 2552444

अब तक आपने पढ़ा–

ग्यारहवी किस्त

0 अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है।

0 सावन मोना से अपने दोस्त विशाल के द्वारा एक लड़की के पीछे पड़ जाने पर हो रही बदनामी के चलते आत्महस्या किये जाने के बारे में बताता है।

0 सावन परीक्षा में अच्छे अंको से पास हो जाता है। मनोज पाण्डेय अनु के पिता से मिलते है तथा अपनी प्रेम कहानी और शादी के बारे में बताते हैं। **और अब आगे....**

☞"क्या मैं आंखें बंद कर लूॅं। कुछ चीजें मेरे सामने न करो, आखिर मैं बहन जो हूॅं।" बबली कहती है।
☞अरे देवर जी, वो आपके भइया है। पर मेरे तो.....।
☞आपके कदमों के साये को पाने का इन्तजार करती शालू द्वारा सप्रेम भेंट।
☞ सावन और मोना तथा अनिल और अनु कोर्ट मैरिज करते है। सावन अनु और अनिल को अपने पत्र–मित्र के पास बाहर कुछ पैसे देकर भेज देता है।

सावन के सभी पेपर्स अच्छे होते हैं। सावन का रिजल्ट आता है। वह संस्थान में प्रथम स्थान प्राप्त करता है। उसका फोटो सहित विवरण पेपर में देखकर मोना खुशी से पागल हो जाती है। वह अपने दोस्तों को मिठाई बॉटती है। सावन के लिए अच्छे पकवान तैयार करती है। सावन और मोना बबली के घर पर मिलते हैं। बबली के घर पर इस समय उसके सिवा कोई भी नहीं था। कुछ दिनों के लिए सभी लोग बाहर गये होते हैं। वह बबली के सामने ही सावन को चुमने लगती है और कहती है–"मेरे प्यारे सावन आपने मेरी लाज रख ली। आज आप मुझसे जो कुछ भी कहेंगे वह मैं करने को तैयार हूॅं। मुझे मालुम था कि मेरा सावन करोड़ो में एक है।" (वह एक आधुनिक युग में रहने क बावजूद, सावन के गले में काला धागा बॉधती है।) तेरी प्यारी–प्यारी सूरत को, किसी डायन की नजर न लगे।

"क्या मैं आंखें बंद कर लूॅं। कुछ चीजें मेरे सामने न करो, आखिर मैं बहन जो हूॅं।" बबली कहती है।

"पगली कहीं की।"

तीनों एक साथ बैठते हैं। मोना सावन को एक–2 पकवान अपने हाथों से खिलाती जाती है और सावन बिल्कुल बच्चा सा बैठा बस मोना को, उसके हाव–भाव को देखता जाता और खाता जाता। वह मन में सोचता है–वाह क्या खूब कमाल है। इन हाथों के कमाल से मिट्टी भी सोना बन जायेगा। सावन धीरे–धीरे इतना अधिक खा लेता है कि वह उठ ही नहीं पाता। उसे मोना हाथ पकड़कर उठाती है। ऐसा लगता है मानों सावन कोई बच्चा हो। मोना उसका मुॅह भी धोती है और अपनी रूमाल से उसका मुॅह पोछती है। उसे अपनी गोद में लिटाकर उसके सर पर हाथ फेरने लगती है।

"मोना, तुमने आज मुझसे कहा है न कि आज मेरी प्रत्येक मॉग पूरी होगी तो चलो मैरिज कर लेते हैं।"

"सच, सावन। आपने मेरे दिल का पैगाम सुन लिया।"

वे दोनों कोर्ट मैरिज की सारी योजना बनाते हैं और निर्णय लेते हैं कि दोनों गुपचुप कोर्ट मैरिज करेंगे और जब सर्विस लग जाएगी तो सबको बतायेंगे।

....

सावन कोर्ट–मैरिज के बारे में पूर्णतया जानकारी के लिए अपने पत्रामित्रा मि0 अजय अग्निहोत्री, जो हाई–कोर्ट के वकील है, से मिलता है। वह पहले तो उनसे इधर–उधर की बातें करता है। अन्ततः वह अपने मुख्य उद्देश्य पर आते हुए पूछता है–"भइया, हिन्दू विवाह अधिनियम के अन्तर्गत कोर्ट मैरिज का क्या प्रावधान है। वह कैसे होता है?"

"पहली और मुख्य बात तो यह है कि लड़की और लड़का दोनों को वयस्क यानि 18 व 21 वर्ष का होना अनिवार्य है। लड़का और लड़की कोर्ट में रजिस्टार के सामने हाजिर होते हैं। वे वहॉ एक दूसरे के साथ रहने के संकल्प पर हस्ताक्षर करते हैं। इसकी कुछ लोग गवाही भी देते हैं। इसके बाद किसी को कोई आपत्ति न हो इसके लिए एक नोटिसा कोर्ट के बाहर लगायी जाती है। यह वैसे तो 6महीने के लिए होता है लेकिन सामान्यतः 1 महीने के अन्दर किसी की आपत्ति नहीं आने पर मैरिज–सर्टिफिकेट प्रदान कर दिया जाता

है।”

“अच्छा भइया, चलता हूँ। फिर आपसे जल्द ही मुलाकात करूँगा, आपकों कष्ट देने के लिए।”

(हंसते हुए)”सावन, कोई चक्कर–वक्कर तो नहीं है?”

“नहीं भइया, ऐसी बात नहीं है। अगली बार विस्तृत ब्योरा दूंगा।”

सावन वहॉ से चला आता है।

....

सावन, अनिल और अनु को बुलाता है। उनसे विस्तृत रूप में बाते करता हैं। अन्ततः अनु के विशेष आग्रह पर सावन के जन्म दिन 15 जून को ही कोर्ट मैरिज की योजना बनती है। मोना को भी इस बात की जानकारी मिलती है। पर इस खबर को कुछ ही लोगों तक सीमित रक्खा जाता है।

सावन इसी बीच पुनः मि0 अग्निहोत्री से मिलने जाता है। चूँकि मि0 अग्निहोत्री सावन से उम्र में बड़े होते है, इसलिए सावन उनका बहुत सम्मान किया करता था। वह अपने बारें में उनसे कहने पर थोड़ा संकोच महसूस करता है। वह इस बारे में बाते करने के लिए श्रीमती अग्निहोत्री के पास जाता है। वह सारी बातें श्रीमति अग्निहोत्री को बताता है।

“मेरे प्यारे–प्यारे देवरजी, बस इतनी सी बात। यह काम तो भइया जी 6महीने के बजाय एक दिन में ही करवा देंगे। और फिर वो भी हमारे देवर जी यानी उनके प्यारे पत्रा–मित्रा के लिए, किसी प्रकार की चिन्ता मत करिये। और फिर भइया सावन, एक गवाही मैं दूंगी।(मुस्कराते हुए)पहले हमारी देवरानी को तो लाओ।”

“भइया से .....।”

“अरे देवर जी, वो आपके भइया है। पर मेरे तो.....। उन पर मेरा पूरा हक है। मैं अपना वीटों लगा दूंगी। आप अपना काम करो।”

“शुक्रिया, भाभी जी।”

....

15 जून को सावन का जन्म दिन होता है। अनिल की मम्मी और भाभी के कहने पर अबकी साल जन्मदिन का प्रोग्राम अनिल के घर पर होने को तय होता है। उसकी मम्मी कहती है–

“आज मेरे दूसरे बेटे का जन्म दिन है।”

“ठीक है मम्मी जी। मगर शाम को। अभी हम लोग दोस्तों के साथ घूमने जा रहे हैं।”

“क्यों देवर जी। कौन सा दोस्त. ही या

सी। शाम को आपके दोस्त ही तो आयेंगें, फिर दिन में कौन?”

“भाभीजी, आप तो बस अपने कॉलेज लाइफ की गुलछर्रे को ही ध्यान में रखती है।”

“ओ, हो...हो..., च...ऽऽ, ना..ना, मेरे प्यारे, भोले, निहायत शरीफ देवरजी, ऐसी बातें नहीं करते। भइया सुनेंगे तो ऽऽ। मगर ये शराफत का ढोंग कब तक, कहीं छुपे ‘रूस्तम निकले तो।”

“अगर होगी भी तो कोई आपकी बहन ही। मेरे हुस्न की मलिका।”

“गॉड ब्लेस यू। आई एम विद यू।”

निर्धारित समय और स्थान पर सभी मिलते हैं। वहॉ सावन एक इक्का हॉकते हुए पहॅुचता है। वह इक्के वालों जैसा ड्रेस भी पहने रहता है। वह सबको देखकर चिल्लाता है– “कचहरी, कचहरी।”

सब उसकी आवाज सुनकर चौंकते हैं और इधर–उधर देखने लगते हैं। सभी एक दूसरे का मुँह देखने लगते है। सावन को कोई पहचान नहीं पाता। लेकिन अनु सावन को पहचान जाती है। और वह दौड़कर उससे लिपट जाती है।

“ओह भइया, ये क्या वेश बना रक्खा है?”

“अरे अनु, क्या मैं बुरा लग रहा हूँ। कार तो अभी खरीद नहीं सकता, किराये पर ले नहीं सकता, सर्विस मिलने से रही क्योंकि आरक्षण और भ्रष्टता का बोलबाला है। र मैंने सोचा यही बेहतर धन्धा और इसे आज नहीं तो कल दी के बाद करना ही पड़ेगा सो ज से ही शुभ मुर्हुत में प्रारम्भ दिया धन्धा अपना।”

स भी करो भइया, कपड़े बदल।”

गों? इक्का कौन चलायेगा।”

गा? आप।”

बाबा, हॉ। आज अपनी बहना अपहरण जो कराना है। इसलिए सारथी बनकर आया हूॅ।”

सभी इक्के पर बैंठते है और हनुमान मंदिर जाते हैं। वहॉ सभी हनुमान जी से प्रार्थना करते हैं और सावन को जन्म दिन की बधाई देते हैं। अनु सावन को चॉदी की राखी बॉधती है।

“भइया, यही मेरी तरफ से आपके लिए तोहफा है।”

शालू, सावन को एक खूबसूरत सा ताजमहल देती है। जिसे उसने खुद ही बनाया होता है। जिसे बहुत ही प्यारे, सितारों और मोतियों से सजाया गया होता है। उसको देखने से ही लगता है कि वह कितने प्यार से, मशक्कत से बनाया गया है। उसके ऊपर लिखा होता है–”लव

ऑफ गॉड, सावन।"
नीचे खुबसूरत अक्षरों में लिखा होता है–
"आपके कदमों के साये को पाने का इन्तजार करती शालू द्वारा सप्रेंम भेंट।"
सावन जब यह पढ़ता है तो क्षण भर के लिए भाव–विहवल हो जाता है। वह कभी शालू को देखता है तो कभी उसके उपहार को। वह सोचता है–मेरे लिए इसके दिल में इतनी श्रद्धा है।
"शालू जी, आपने थोड़ी सी देर कर दी। खैर एक दोस्त के रूप में हर समय आपके साथ रहुँगा। ये मेरा आपसे वादा रहा।"
शालू की ऑखों में मोती से भी किमती ऑसू टपकने लगते हैं। ऑसू की कुछ बूंदें सावन के पैर पर पड़ती है। सावन अपने पैर पर पड़े ऑसू की बूंदों को हाथ से पोछकर सिर पर लगा लेता है। और शालू की आंखों के आंसू को अपने हाथों से पोछते हुए "शालू जी, इन मोतियों की धार को यूॅ न बहाइए। ये बड़े ही अनमोल है। इन मोतियों की धार में सारा संसार भींग कर बह जाएगा।"
(शालू अपने धैर्य का परिचय देते हुए कहती है।)
"अरे! सब लोग यहीं खड़े रहोगे, कोर्ट का टाइम हो रहा है, जल्दी करो।"
मोना वक्त की नजाकत को समझती है। वह सबकुछ जानती है। मोना, सावन को तिलक लगाती है। सभी इक्के पर बैठते है। और कोर्ट की ओर चल देते हैं।
सावन रास्तें में सोचता है–भगवान भी अजीब है। कभी बिन बादल के बरसात हो जाती है और कभी ऐसा लगता है कि बादल गरज रहे हैं पूरा संसार बरसात के पानी में बह जायेगा, पर कुछ भी नहीं होता। अब तक बिल्कुल अकेला था और अब इकट्ठा दो–दो बिसात बिछाए हैं। सावन अभी इन्हीं विचारों के उधेड़–बुन में खोया है कि बबली कचेहरी गेट पर जोर से चिल्लाती है–
(रोब से चिल्लाकर)"ऐ इक्के वाले, कहॉ जा रहा हैं। इक्का यहीं रोक दो, वरना, अभी अन्दर करवा दूॅगी।"
सभी जोर से हॅसते है।
"अरे इक्के वाले की बहना, रूक जा मैं आता हूॅ।"
"अरे भइया, अब तो कपड़े बदल लो। अब आप दूल्हा बनने जा रहे हो, राजा दूल्हा।"
सावन कपड़े बदलता है। वही मि0 अग्निहोत्री से भी मुलाकात हो जाती है। सभी कोर्ट में जाते हैं। कोर्ट की सारी कार्यवाही पूरी होती है। रजिस्टार एक दिन बाद रिटायर होने वाले होते हैं। वे इस खुले माहौल को देखते हुए कहते है–
"अरे भाई, अग्निहोत्री, जल्दी करो। हमें भी तो अपने बहू और बेटे को आर्शीवाद देना है।"
रजिस्ट्रार मि0 अशोक शुक्ला भाव–विहवल हो जाते हैं। सावन और मोना उनका पैर छूते हैं। रजिस्टार उनको आर्शीवाद देते हुए कहते है–"तुम लोगों की जोड़ी इस संसार में मिसाल बने। तुम लोगों को हमारी उमर भी लग जाये।"
अनिल और अनु सबसे पहले सावन का पैर छूने को झुकते हैं।
"अरे अनु पागल हो गयी है क्या? तुम लोगों का स्थान तो मेरे दिल में हैं, पैरों में नहीं।"
सावन, अनिल और अनु को गले लगा लेता है। फिर सभी मि0 एवं मिसेज अग्निहोत्री का पैर छूते हैं।
"लो बेटे, यह प्रमाण पत्रा। हमारे जिन्दा रहते तुम लोगों को कोर्ट से कोई प्राब्लम नहीं आयेगी। जब भी कोई बात हो, तो बस मुझे खबर कर देना, मैं भारत के किसी कोने में रहूॅगा, सब संभाल लूॅगा।"
सावन, मोना, अनिल और अनु फिर से मि0 अशोक शुक्ला का पॉव छूते है।

....

सावन, अनिल व अनु के लिए पहले से ही दो टिकट ट्रेन का बुक कर चुका होता है। उनके रहने, खाने–पीने का भी सार इन्तजाम कर दिया होता है। सभी उन्हें स्टेशन पर छोड़ने जाते है। यद्यपि सावन को सायंकाल अपनी बर्थ–डे पार्टी में भी शरीक होना था। फिर भी वह आगे की कार्यवाही में पूर्णरूपेण लगा होता है। ट्रेन आती है। सावन ने ट्रेन पर सामान रखवाता है।। अनु ऑखों में अश्रुधारा लिए हुए सावन के पास आती है।
"भइया द्वापर में भगवान श्री कृष्ण ने अपनी बहन सुभद्रा का अपहरण करवाया था। और आज कलियुग में आप कर रहे हो।"
"अरे पगली जानती हो, मैं भी वहीं पैदा हुआ था जहॉ मेरे श्री कृष्ण भइया। इसलिए थोड़ा सा असर तो रहेगा ही।"
सावन, अनु के ललाट पर एक चुम्बन देता है और एक भाई का फर्ज पूरा करते हुए अनिल और अनु को ट्रेन में बैठाता है। अनिल, सावन से कुछ कहना चाहता है और सावन समझ भी जाता है।
"तुम लोग जाओ। ये कुछ पैसे रख लो। वहॉ आराम से रहना। और किसी प्रकार की चिन्ता मत करना। यहॉ मैं सब संभाल लूंगा। पैसे की जरूरत होगी या कोई अन्य समस्या आएगी तो मुझे खत लिखना। यहॉ की स्थिति सामान्य होने पर मैं तुम दोनों को वापस बुला लूंगा।"
ट्रेन सीटी देती है। सभी विदा लेते है। सावन और मोना पूर्ववत मिलते रहने को कहते हैं। वे शादी का ऐलान सर्विस पकड़ने के बाद करने का विचार करते हैं। मोना को आए काफी देर होने के कारण मोना और बबली को छोड़ने मि0 एव मिसेज अग्निहोत्री स्वयं जाते हैं।

एसएमएस एक प्रभावशाली व सशक्त जरिया संदेश भेजने का

अपने मोबाइल फोन पर बात करने से कहीं ज्यादा आसान और अच्छा है उस पर एसएमएस भेजना और प्राप्त करना। एसएमएस धीरे–धीरे दूरसंचार का एक प्रमुख और प्रभावशाली जरिया बनता जा रहा है। ब्रिटेन में किए गये एक सर्वे के मुताबिक युवा टीवी और चॉकलेट तो छोड़ने को तैयार है मगर एसएमएस सुविधा नहीं जबकि भारत में हुए सर्वे में बहुत सी लड़कियों ने कहा कि अगर नया फ्रेंड बहुत अच्छे एसएमएस भेजता हो, तो वे बॉय फ्रेंड बदल सकती है। याहू पर आप अपना स्वयं का एसएमएस ग्रुप बना सकते है। याहू के माध्यम से आप लोगों, स्क्रीन सेवर, रिंगटोन, पिक्चर मैसेज या मोबाइल ग्रिटींग भेज सकते है। इसके अलावा न्यूज, राशिफल, डिक्शनरी के साथ ही हजारों रिंगटोन जिनमेंआपको कांटा लगा, से लेकर विश्व की टॉप मोस्ट धुनें भी मिलेंगी बिल्कुल मुफ्त। फिल्मी सितारे आपके एसएमएस का जबाव भी देंगे। इसके माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओ में भी भाग ले सकते है।

भारत में हुए सर्वे में बहुत सी लड़कियों ने कहा कि अगर नया फ्रेंड बहुत अच्छे एसएमएस भेजता हो, तो वे बॉय फ्रेंड बदल सकती है।
न्यूज, राशिफल, डिक्शनरी के साथ ही हजारों रिंगटोन जिनमेंआपको कांटा लगा, से लेकर विश्व की टॉप मोस्ट धुनें भी मिलेंगी बिल्कुल मुफ्त।

यदि आप कहीं बैठे–बैंठे ऊब रहे हो तो रेडिफ की एसएमएस फ्लटिंग को ट्राई कर सकते है। यहां मिलेगें मस्त लोग। एसएमएस के माध्यम से आप युवाओं से संपर्क कर सकते हैं, उनसे ट्राई कर सकते है।

अब लम्बे लव लेटर लिखने का जमाना लद गया। अब टू द प्वाइंट का जमाना आ गया है। आप एसएमएस शायरियां भी भेज सकते है। जहां तक सुनने में आता है भारतीय युवा दिल की बात कहने में हमेशा से बचते है। लेकिन अब लेटर खोने, गलत हाथ में पड़ने का भय समाप्त और उत्तर की प्रतीक्षा में घंटो छतों पर खड़ा रहना, किसी आने व पत्थर बांधकर लव लेटर भेजने का इंतजार की घड़िया भी खत्म हुई। तुरंत जबाव हाजिर है। अगर बात नहीं बनी तो तू नहीं कोई और सही। अब बड़े घरानों के स्कूल कॉलेज जाने वाले अधिकांश बच्चों के पास मोबाइल है। वे अब पढ़ाई लिखाई छोड़कर बिना क्लास में शोर किए अपनी बातचीत जारी रख लेते है। एसएमएस ने बजरंग दल, शिवसेना की वेलेंटाइन डे, नववर्ष की ग्रीटींग की समस्या भी समाप्त कर दी अब तो इनकी जरूरत ही क्या है। इसके चलते कंपनी वाले परेशान है।

लेकिन एसएमएस से एक नुकसान भी है इसके जरिए गंदी प्रवृत्ति भी फैल रही है। लेकिन जो भी दूरसंचार कंपनियों के लिए यह लाभ का सौदा साबित हो रहा है। उन्हें जनता के नुकसान से क्या। कुछ कंपनिया एसएमएस के जरिए न्यूज, स्टॉक मार्केट, मार्केट रिर्पोट, बैंकिग सेवाएं, मौसम रिर्पोट, फ्लाइट इनफारमेशन, और लाटरी रिजल्ट आदि देने लगे है। रिलायंस ने परीक्षाओं के परिणाम भी देने प्रारम्भ कर दिये है। आजकल व्यापारी वर्ग आर्डर के लिए फोन करने के वजाय एसएमएस से ही अपना आर्डर बुक कराने लगी है। इसकी वाजिब वजह भी है–न शोरगुल, न लाइन बिजी की झंझट, न लिखित आर्डर का लफड़ा, न संबंधित व्यक्ति के समय पर उपलब्ध होने का खतरा। बस साठ पैसे से डेढ़ रूपयें में ही काम तमाम। कुछ तो सर्विस फ्री भी देने लगी है। एचडीएफसी ने मोबाइल बैंकिग भी प्रारम्भ कर दी है। अब एसएमएस के जरिए एकाउंट चेक कर सकते हैं, पूरानी निकासियेंा का हिसाब मांग सकते है, चैकबुक का आर्डर दे सकते है।

गुप्त रोग ताकत जवानी

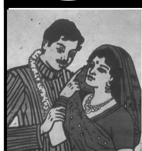

गुप्त रोगों के शर्तिया ईलाज हेतु आज ही मिलें

सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

नोटः ध्यान रहे, सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है, गारण्टी नहीं। बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

मिलने का समयः

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

नोट : उत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

हमारे यहॉ आधुनिक तरीके से तैयार युनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में बगैर किसी नुकसान के लाखाों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

आखिर गुप्त रोग है क्या? जिसे घर वालों से गुप्त, पास–पड़ोस से गुप्त मित्रों से गुप्त, यहॉ तक कि पत्नी से भी गुप्त रखा जाये, क्या गुप्त रोग कोई समस्या है? क्या गुप्त रोग छुआछूत है? या फिर गुप्त रोग भूत–प्रेत है? अगर आप में से आपके जानने वालों में से परेशान है तो कृपया कोई भी ऐसा सुझाव न दें, जिससे रोगी घबराहट या परेशान होकर आजकल के लुभावनें प्रचारों जैसे गारण्टी और चन्द दिनों के अन्दर ठीक करने का दावा करने जैसे प्रचारों पर ध्यान देने लग जाये और बाद में अपना पूरा जीवन अंधेरे में बिताने पर मजबूर हो जायें। ऐसे रोगियों के लिए **“न्यू हेल्थ क्लीनिक”** के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर का मशवरा है कि यदि आप नपुंसकता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, धातु रोग, पेशाब में जलन सुस्ती, कमद दर्द, पेट रोग, गर्मी सुजाक जैसे आदि रोगों का शिकार हो चुके हों और जगह–जगह इलाज के बाद भी सफलता न मिली हो तो आज ही **“न्यू हेल्थ क्लीनिक”** में आकर **डॉक्टर एम.आर.शाही** गवर्नमेंन्ट रजिस्टर्ड सेक्स स्पेशलिस्ट से मिलकर सरल एवं सफल इलाज करवाकर वैवाहिक जीवन का भरपूर लाभ उठायें।

न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा0 झा के ठीक सामने), घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

बिहार में अपहरण अपराध नहीं बल्कि संस्कृति

बिहार के लगभग आधा दर्जन वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी जान को सफेदपोशों से खतरा बताते हुए सरकार से अपनी सुरक्षा की मांग की है। और तो और वहां के राज्यपाल के सचिव तक को सुरक्षा की गुहार लगाने की जरूरत आ पड़ी। इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है।

बिहार राज्य के बारें में एक आम वाक्य है कि वहां जो कुछ भी हो जाय वह कम है। एकतरफ वहॉ कें पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव एवं उनकी धर्मपत्नी मुख्यमंत्री राबड़ी देवी बिहार में अमन चैन होने का दंभ भर रहे हैं तो दूसरी तरफ पीसीएस और आईएएस रैंक के अधिकारियों तक को भी अपराधी खुल्लम खुल्ला धमका रहे हैं। जिससे आम जनता तो दूर ये अधिकारी भी डरे हुए है।

लेकिन यह बहुत गंभीर मसला है और चिंतन का विषय है कि जिस राज्य में अधिकारी वग्र तक सुरक्षित नहीं है वहां आम जनता का सुरक्षा स्तर कितना सुदृढ़ होगा इसका अंदाजा आप खुद ही लगा सकते है। बिहार में अपहरण, लूटपाट और मारपीट की घंटनाएं अब आपराधिक वारदातें नहीं रही, बल्कि यंहा की संस्कृति का एक जरूरी हिस्सा बन गई हैं।

बिहार के लगभग आधा दर्जन वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी जान को सफेदपोशों से खतरा बताते हुए सरकार से अपनी सुरक्षा की मांग की है। और तो और वहां के राज्यपाल के सचिव तक को सुरक्षा की गुहार लगाने की जरूरत आ पड़ी। इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है। सरकार से सुरक्षा की गुहार करने वालों में दरभंगा की प्रमंडल आयुक्त श्रीमती अमिता पॉल, राज्य में व्याख्याताओं की नियुक्ति रद्द करने के बाद एक बार फिर चर्चा में आए राज्यपाल के सचिव मिथिलेश कुमार, बिहार राजस्व परिषद के अपर सदस्य व वरिष्ठ आईएएस अधिकारी आनन्दवर्द्धन सिन्हा तथा कमिश्नर रैंक के आईएएस अधिकारी गंगाधर लालदास हैं। आनन्द वर्द्धन सिन्हा ने मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव, गृह सचिव और पुलिस महानिदेशक को पत्र लिखकर जान–माल की सुरक्षा की गुहार की है। सिन्हा ने कहा कि पिछले महिनों उन्हें डाक से एक पत्र मिला जिसमें उन्हें अबुल कलाम नामक व्यक्ति ने उन्हें तथा उनके पुत्र को अगवा करने की धमकी दी है। पत्र में लिखा है कि सिन्हा ने लगभग 6 करोड़ रूपये अब तक कमाए हैं। इन पैसों को वे कहीं न तो खर्च करते है और न हीं किसी मदद करते है। सिन्हा के अनुसार ऐसे धमकी भरे पत्र पहले भी मिले, लेकिन उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया था। लेकिन इस बार अपने तथा अपने पुत्र के अपहरण की धमकीं से चिंतित हैं। इसीलिए उन्होंने सरकार से अपने परिवार की सुरक्षा की गुहार की है। इस बार पत्र लिखने वाले ने 15 लाख रूपये की भी मांग की है। श्री सिन्हां डर के मारे अपने पुत्र को स्कूल भेजना भी बंद कर दिया है।

अभी कुछ दिनों पहले दरभंगा प्रमंडल की आयुक्त अमिता पॉल को भी कुछ अज्ञात अपनराधियों ने पत्र लिखकर जान से मारने की धमकी दी थी। इस धमकी के कारण श्रीमती पॉल ने राज्य के गृह सचिव और पुलिस महानिदेशक से अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की थी। सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि राज्य प्रशासन ने अधिकारियों को इस तरह धमकी देने वालों को न तो पकड़ने का प्रयास किया है और न ही चिन्हित ही किया है।

बिहार प्रशासनिक सेवा अधिकारी संघ के उपाध्यक्ष एवं मत्रिमंडल विभाग के उप सचिव गंगाधर–लालदास ने भी राज्य के वरिष्ठ अधिकारियें से अपनी जान–माल के लिए सुरक्षा मांगी है।

क्या पिछड़ा सवर्ण नहीं होता है?

सावन कुमार

जिस समय वी0पी0सिंह ने मंडल लागू किय उस समय सवर्णो ने आरक्षण का विरोध किया था। उस समय भी यह मांग उठी थी कि क्या सवर्ण पिछड़े नहीं होते। लेकिन उनके आत्मदाह व मांग को वोट की राजनीति के चलते किसी ने ध्यान नहीं दिया। यहॉ तक सवर्ण नेता भी पिछड़ा वर्ग के वोट कटने के डर से चुप्पी साधे बैठे रहे। लेकिन उन्हें क्या, उन्हें तो कुर्सी मिलनी चाहिए चाहे जैसे मिले।

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गरीब सवर्णो को 14 प्रतिशत अलग से आरक्षण देने की घोषणा करके एक नया चुनावी स्टंट खेला है। इस घोषणा से केवल सवर्णो को बेवकूफ बनाया जा सकता है उनका भला नहीं। वैसे भी आरक्षण से केवल सामाजिक मतभेद व दुर्भावना को बढ़ावा ही मिल रहा है। उस पर से जातिवाद पर आधारित आरक्षण एक तो करैला ऊपर से नीम चढ़ा वाली कहावत को चरितार्थ करता है।

समझ में नहीं आता एक ओर देश के कर्णधार जातिवाद को बड़ी समस्या बताकर उसे समाप्त करने की बातें करते हैं, वहीं दूसरी ओर वहीं कर्णधार आरक्षण के नाम पर मासूम बच्चों के मन में ऊँच–नीच व जातिवाद के बीज बोते है। हमारे देश में बहुत से परिवार ऐसे है चाहे वो किसी भी जाति के हो, ब्राहमण, ठाकुर, बनिया भले ही इनका संबंध सवर्ण जाति से रहा हो लेकिन उनको दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता। भुखमरी के कागार पर रहा करते हैं, घर में चूल्हा नहीं जलता, परन्तु हमारी सरकार इसको नजरअंदाज करके सदैव जाति के आधार पर आरक्षण का बिगुल बजाती रहती है और अपनी राजनीतिक रोटी सेंकती रहती है। उसका गरीबी और अमीरी से कोई लेना देना नहीं है बल्कि जाति के आधार पर फूट पैदा कर एम.पी., एम.एल.ए. बनना है। ब्राहमणों में एक जाति महापात्र होती है जिनकों गांवो में जाने की इजाजत आज भी नहीं है, जब वे गांवों में घूस ही नहीं सकते, तब वे पढ़े–लिखेंगे कैसे? क्या ये दलितों की श्रेणी में नहीं आते। जिन्हें इसी बिना पर पिछले पचास सालों से आरक्षण मिला है।

कुछ ऐसे भी कथित पिछड़ी जाति के परिवार है जिनके बच्चें ऐशों आराम की जिन्दगीं जी रहे हैं, विदेशी कारों में घूमते हैं। ऐसे लोग मात्र सरकारी कागजों में पिछड़े है। ऐसे लोगों का विकास दलित के नाम पर जादू के पिटारे पर निर्भर है। दलित और पिछड़ा शब्द ही इनकी योग्यता और ऐश का प्रमाण है। बहुत से लोग मात्र आरक्षण के बल पर उच्च पदों पर असीन है और योग्यता के अभाव में राष्ट्र को अधिकाधिक क्षति पहुँचा रहे हैं।

हमारे देश में बहुत से परिवार ऐसे है चाहे वो किसी भी जाति के हो, ब्राहमण, ठाकुर, बनिया भले ही इनका संबंध सवर्ण जाति से रहा हो लेकिन उनको दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता। भुखमरी के कागार पर रहा करते हैं, घर में चूल्हा नहीं जलता, परन्तु हमारी सरकार इसको नजरअंदाज करके सदैव जाति के आधार पर आरक्षण का बिगुल बजाती रहती है और अपनी राजनीतिक रोटी सेंकती रहती है।

ब्राहमणों में एक जाति महापात्र होती है जिनकों गांवो में जाने की इजाजत आज भी नहीं है, जब वे गांवों में घूस ही नहीं सकते, तब वे पढ़े–लिखेंगे कैसे? क्या ये दलितों की श्रेणी में नहीं आते। जिन्हें इसी बिना पर पिछले पचास सालों से आरक्षण मिला है।

सुप्रीम कोर्ट 3(ब) का उत्तर देते हुए कहा कि पिछड़े वर्ग की पहचान जाति के साथ–साथ पेशे के हिसाब से ग्रुप, समुदाय और वर्ग के हिसाब से भी की जा सकती है। कुछ ऐसे भी समूह या वर्ग है जहॉ जाति प्रासंगिक नहीं है। उदाहरणार्थ खेतों में काम करने वाले, रिक्शा चालक, ड्राईवर, हॉकर, कूली, सरकारी, गैरसरकारी कार्यालयों में काम करने वाले चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी, छोटे दुकानदार आदि पूर्णतया पिछड़े वर्ग में आते हैं।

आरक्षण समस्या के निदान के लिए यह भी आवश्यक है कि आरक्षण ऐसे ही लोगों को मिले जो वास्तव में ही दलित हो चाहे वे किसी भी जाति के हों।

सच्चाई तो यह है कि आरक्षण हमारे समाज और देश में असन्तोष को बल दे रहा है। यह प्रत्येक जाति में निर्धन लोगों के लिए बेकार सिद्ध हो रहा है। आरक्षण का लाभ मुलायम सिंह और काशीराम ही उठा रहे है। अगर इनकों जातिगत आधार पर हटा दिया जाय तो ये शून्य हो जाएंगे। राजनीतिज्ञों को यह बात भली–भॉति मालूम है कि आरक्षण से देश का भला नहीं हो सकता। फिर भी किसी वर्ग विशेष का हमदर्द बनकर लालू, शरद यादव, अजित सिंह, कल्याण सिंह, नितीश कुमार इत्यादि अपना स्थान बनाए हुए है।

मंडल मामले में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कहा है कि संविधान में यह स्पष्ट नहीं है कि पिछड़ा वर्ग कौन है और इसकी पहचान कैसे होगी? सुप्रीम कोर्ट के अनुसार, यह काम राज्य का है, जो पिछड़े वर्ग की पहचान करके संविधान के अनुच्छेद 16(4) के अंतर्गत आरक्षण की सुविधा प्रदान करें। सुप्रीम कोर्ट ने चित्रलेखा बनाम मैंसूर राज्य (एआईआर 1964, एससी 1823) के मामलें में यह स्पष्ट कर दिया था कि संविधान के अनुच्छेद 16(4) के अंतर्गत पिछड़े वर्ग की पहचान का एक फैक्टर जाति हो सकती है। सुप्रीम कोर्ट 3(ब) का उत्तर देते हुए कहा कि पिछड़े वर्ग की पहचान जाति के साथ–साथ पेशे के हिसाब से ग्रुप, समुदाय और वर्ग के हिसाब से भी की जा सकती है। कुछ ऐसे भी समूह या वर्ग है जहॉ जाति प्रासंगिक नहीं है। उदाहरणार्थ खेतों में काम करने वाले, रिक्शा चालक, ड्राईवर, हॉकर, कूली, सरकारी, गैरसरकारी कार्यालयों में काम करने वाले चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी, छोटे दुकानदार आदि पूर्णतया पिछड़े वर्ग में आते हैं।

संविधान का अनुच्छेद 15(4) ही जाति के आधार पर केवल अनुसूचित जाति/जनजाति को आरक्षण प्रदान करता है और अनुच्छेद 16(4) वर्ग के आधार पर। अगर श्री गहलोत के अनुसार संविधान संशोधन करके पूरे देश के गरीब सवर्णो को अलग से 14 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा प्रदान कर दी जाए तब अनेक विवाद पैदा हो जाएंगे। श्री गहलोत ने गरीब मुसलमानों को भी 14 प्रतिशत में ही आरक्षण की सुविध देने की घोषण की है। कर्नाटक और केरल की सरकारों ने राज्य के मुसलमानों को पिछड़ा घोषित करके पिछड़ा वर्ग की सुविधा प्रदत्त की है। पूरी परिस्थितियों पर गौर फरमाने पर लगता है कि श्री गहलोत आबादी के अनुसार गरीब सवर्णो के लिए 14 प्रतिशत अलग से आरक्षण की घोषणा करके संविधान के संशोधन की राजनीति कर रहे हैं। अगर श्री गहलोत सचमुच में गरीब सवर्णो के हितैषी है ते उन्हें काका कालेकर और मंडल आयोग मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला उनकी मदद को तैयार बैठा है। श्री गहलोत की सवर्ण आरक्षण राजनीति से बौखलाई भाजपा इस मुद्दे पर आयोग बैठाने पर विचार कर रही है ताकि आयोग की रिपोर्ट आते–आते चुनाव सम्पन्न हो जाए।

आरक्षण समस्या के निदान के लिए यह भी आवश्यक है कि आरक्षण ऐसे ही लोगों को मिले जो वास्तव में ही दलित हो चाहे वे किसी भी जाति के हों। जातिगत आधार पर आरक्षण लागू किया जाना बिल्कुल गलत और उचित सोच नहीं है। आरक्षण का लाभ केवल उन्हीं लोगों को दिया जाना चाहिए जिन्हें वास्तव में इसकी आवश्यकता है। पिछड़ी जाति व अनुसूचित जाति/जनजाति से सम्बंध रखने वाला व्यक्ति चाहे कितना भी ऊँचा क्यों न उठ गया हो परन्तु उसे आरक्षण के अन्तर्गत पिछड़ा और दलित ही माना जाता रहा है। और बारम्बार आरक्षण का लाभ सरकार मुहैया कराती है। जो सक्षम पिछड़ी जाति व अनुसूचित जाति के हैं वहीं इसका पूर्ण लाभ उठा रहे है। वास्तव में दलित व पिछड़े आज भी उसी स्थिति में है।

आरक्षण के मुद्दे पर अलग से विचार करने की आवश्यकता है। इसे जातिगत आधार पर न करके बल्कि आर्थिक रूप से लागू किया जाना चाहिए। ताकि वास्तव में विकास हो सके।

शीघ्र प्रकाश्य **शीघ्र प्रकाश्य** **शीघ्र प्रकाश्य**

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 1)

नवोदित कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद

अथवा

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,
धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा,(झलवा)
इलाहाबाद, मो0 : 3155949

दिग्गी राजा की अपनी एक अलग स्टाइल है।

आजकल जब तमाम राजनीतिज्ञ अपनी कमियों को छुपाने का प्रयास करते रहते हैं वहीं मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री दिग्गी राजा (दिग्विजय सिंह) बड़ी बेबाकी से अपनी नाकामयाबियों को बयॉ करते रहते है। कांग्रेस शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों के एकदिवसीय सम्मेलन में कांग्रेस अध्यक्ष सोनियां गांधी ने कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों के कार्यो की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्रियों से कहा कि वे लोग अपने राज्यों की उपलब्धियां ही न गिनाएं, बल्कि उन खामियों को भी बताएं जो वहां मौजूद है। हालांकि ज्यादतर मुख्मंत्रियों ने कांग्रेस की अध्यक्षा सोनिया गांधी के इस सिद्धात का पालन नहीं किया। लेकिन मध्य प्रदेश मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने मादाम की इच्छा के मुताबिक अपने राज्य की उपलब्धियां तो गिनाई हीं, बड़ी बेबाकी से यह भी कहा कि उनकी कुद नाकामयाबियां भी हैं। जिनमें पहली राज्य में सड़कों का वायदे के मुताबिक संजाल न बिछ पाना और दूसरी खामी उन्होंने राज्य में बिजली की खस्ता हालत को गिनाया। पत्रकारों से बातचीत में दिग्विजय सिंह ने सहजता से कहा कि मैंने भरसक प्रयास करने बावजूद अभी तक इन दो मोर्चो पर सफलता नहीं हासिल की है। लेकिन अगले कार्यकाल में इन दोनों खामियों को प्राथमिकता के साथ उपलब्धि में बदल दूंगा। कुल मिलाकर देखें तो दिग्गी राजा ने एक दूरदर्शी पृष्ठभूमि तैयार करनी शुरू कर दी है कि आने वाले चुनावों में तीसरी बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बन सकें, पर सवाल है कि क्या हो सकेगा? क्या सचमुच दिग्गी राजा ईमानदारी से अपनी खामियों को स्वीकार कर रहे है।

प्रत्येक सफल राजनेता की एक कार्यशैली होती है। उसकी सफलता के पीछे उसका एक खास मैनेरिज्म होता है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह सिर्फ कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों में ही नहीं, बल्कि देश के सभी मुख्यमंत्रियों में सबसे प्रभावशाली कार्यशैली के लिए जाने जाते हैं। निस्संदेह इसके पीछे उनके बेदाग छवि और ईमानदारी से नये प्रयोग करने की कुव्वत का योगदान है। मध्यप्रदेश में विगत सालों में चाहे राजनीति का क्षेत्र हो चाहे सामाजिक विकास का, या आर्थिक उपलब्धियों की बात रही हो या प्रशासनिक उपलिब्धयों की। हर क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने पिछले कुछ सालों में कामयाबी हासिल की है, लेकिन मध्यप्रदेश में सिर्फ उपलब्धियां ही नहीं रही, कुछ जबरदस्त खामियां भी रही। मगर दिग्गी राजा की कुशल राजनीतिक शैली और स्टाइलसे उनकी उपलब्धियां तो प्रचारित–प्रसारित हुई है, मगर उनकी नाकामयाबियों को उनके विरोधी और आलोचक भी उस तरह से पकड़ नहीं पाये जैसा कि पकड़ना चाहिए।

वास्तव में मध्यप्रदेश में अगले विधानसभा चुनाव के लिए दिग्गी राजा की इन्हीं खूबियों और खामियों के बीच से मुद्दें निकलेंगें। यद्यपि दिग्गविजय सिंह ने अपने राजनीतिक प्रभामंडल से कांग्रेस में ही नहीं, बल्कि विपक्षी भाजपा में भी वैकल्पिक नेतृत्व की संभावनाओं को कुंद कर दिया है। दिग्गी राजा अपनी कार्यशैली के चलते सब पर भारी पड़ते हैं, चाहे फिर वो असतुंष्ट कांग्रेसी हो या उनके मुखर विरोधी भाजपाई।

दिग्गी राजा के राज में मध्यप्रदेश मे जिस तरह की प्रशासनिक चुस्ती–फुर्ती का पिछले कई साल के मुख्यमंत्रियों के शासनकाल में अभाव रहा है। फिर भी कुछ ऐसी खांमिया रही है, जिन पर विपक्ष ने जनता का ध्यान आकर्षित करने की कोशित तो की है, दिग्गी राजा की कुशलता के सामने असफल साबित हुए। गिनाने को जैसे मध्यप्रदेश में बलात्कार की घटनाएं देश में सबसे ज्यादें होती है। विगत दस सालों में इनमें बढ़ोत्तरी ही हुई है। लेकिन विपक्षी दल इस मुद्दें को भी भुनाने में असफल रहे। दूसरी बड़ी खामी रही है शिक्षा के क्षेत्र में। दिग्गी राजा के शासन काल में शैक्षणिक स्तर में सुधार हुआ है लेकिन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रो में शिक्षा की प्रगति उतनी भी नहीं रही, जितनी प्रदेश के दूसरे हिस्सों में। कुछ तो बला टल गई अलग छत्तीसगढ़ राज्य बन जाने से। क्योंकि इसमें मध्यप्रदेश का लगभग 75 प्रतिशत आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र चला गया।

सबसे बड़ी खामी है कि पिछले दस सालों में राज्य में रोजगार के अवसरों का न पैदा होना। कुल मिलाकर अगर जनसंख्या के हिसाब से देखा जाए तो दिग्विजय सिंह के शासन काल में मध्यप्रदेश में बेरोजगारों की एक अच्छी–खासी फौज तैयार हुई है, लेकिन दिग्गी राजा अपनी वाकपटुता और राजनीतिक प्रभामंडल के चलते इन असली मुद्दों पर लोगों का ध्यान नहीं जाने देते। पर सवाल यह है कि क्या दिग्गी राजा अपनी इस वाकपटु शैली से मतदाताओं को अपने हक में कर लेगें? अगर वे सचमुच आत्मथंन करना चाहते है अपनी खामियों पर करें।

कहानी

रफ़्तार

एस.ए.ए.रिज़वी

आन्धी–तूफ़ान की तरह अपनी मोटर साईकिल दौड़ाता हुआ पुलिस इन्सपेक्टर जगदीश कुमार थाने के अन्दर दाखिल़ हुआ और तीर की तरह अपने कमरे में दाख़िल होकर किसी भारी बोरे की तरह कुर्सी पर गिर कर हांफने लगा। रह रह कर कमिश्नर की फटकार उसके कानों में जा गूंज रही थी–देखो–देखों, यह अख़बार, पढ़ो कि किस तरह पुलिस डिपार्टमेंन्ट पर कीचड़ ऊछाली जा रही है। यही नहीं पॉर्लियामेंट में भी हमारे ऊपर बहस शुरू होने लगी है। यह सब सिर्फ तुम्हारी ही वजह से हो रहा है। नहीं–नहीं मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। जानते हो सी0आई0डी0 वाले भी हरकत में आ गये हैं। तुम्हें आख़िरी मौका दिया जा रहा है। अगर दो दिनों के अन्दर भूरे लाल ज़िन्दा या मुर्दा हाज़िर नहीं हुआ तो तुम्हारा क्या होगा, तुम सोच भी नहीं सकते। नो आरगूमेन्ट, नाऊ यू कैन गो–‘

वह गुस्से में बैठा हुआ मेंज पर अपने हाथ इधर–उधर मार रहा था तभी मेज पर पड़ी हुई भूरे लाल की फ़ाइल उसके हाथों से खुल गई। उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे भूरे लाल की तस्वीर उसे मुंह चिढ़ा रही हो। गुस्से में जगदीश ने भारी पेपर वेट उठा कर तस्वीर पर पटख़ दिया। भूरे लाल को तो कुछ नही हुआ अलबत्ता मेंज़ पर बिछा हुआ क़ीमती शीशा झंनाकेदार आवाज में चींख पड़ा। आवाज़ इतन तेज थी कि बाहर बैठा हुआ चपरासी दौड़ कर अन्दर आया तो जगदीश दहाड़ पड़ा “भाग जाओ।” वह बेचारा बौखलाहट में जैसे ही वापस जाने को पलटा तो दरवाजे के पर्दे से उलझ कर गिर पड़। मगर फौरन ही वह उठ कर भाग गया। अगर जरा भी देर होती तो जगदीश ने जो पेपर वेट उसकी तरफ़ फ़ेका था उसके सिर पर पड़ता मगर इस बार को दरवाजें की बग़ल में रखी हुई पानी की सुराही ने अपने सिर पर ले लिया, नतीजे में उसका सारा पानी कमरे में फैल गया। ठीक उसी वक्त

‘न्युटाईम्स’ अख़बार का क्राईम रिर्पोटर ‘अनवार’ कमरे में दाख़िल हुआ और कमरे की हालत देखते ही बोला–‘या खुदा यह कैसा अजूबा, बाहर बादलों का पता कहीं पता नही और कमरें में सैलाब आ गया।’ जगदीश अपने दोस्त को देखते ही बुरा सा मुॅह बना कर रह गया। अनवर इतमेनान से कुर्सी पर बैठ जाने के बाद सिगरेट सुलगाने के बाद बोला–‘क्या बात है दोस्त, प्यारे, तुम तो इस तरह मुॅह फुला कर बैठे हो जैसे पतिदेव परदेश सिधार गये हों और वह गा रही हो’ ओ दूर जाने वाले वादा न भूल जाना’ अनवर की इस हरकत पर जगदीश तिलमिला कर कुछ कहने ही वाला था तभी अनवार बोल पड़ा–“वैसे जैसी दुर्गत आज कमिश्नर ने तुम्हारी की है खुदा न करें किसी दुश्मन की हो।” इस बात पर जगदीश चौक पड़ा–“त. .तुम्हें कैसे मालूम?” अनवर जगदीश को देखकर मुस्कराते हुऐ बोला–“प्यारे इन्सपेक्टर मुझे तो यह भी मालूम है कि आज सुबह ही सुबह तुम एक चोंच बीबी से लड़ चुके हो। प्यारे मैं क्राईम रिर्पोटर हूॅ, हर मोहरे पर नज़र रखना अपना फ़र्ज़ समझता हूॅ। घबराओं नहीं प्यारे, तुम्हारी दुर्गत की ख़बर नहीं बल्कि यह जरूर छापूंगा कि क्या भूरे लाल इन्सपेक्टर जगदीश की जेब में है जिसे वह निकाल कर मेज़ पर रख दे।” अनवर की बातें सुनकर जगदीश सांप की तरह फुंफ़कारा–“नहीं तुम इस मामले में कुछ नहीं बोलोगें, मैं तुम अख़बार वालों को ख़ूब समझता हूॅ।”

“यार आख़िर भूरे लाल है कहॉ, क्यों! यार मेरी नेक सलाह यही है कि सी0आई0डी0 वालों को ही भुगतने दो।”

“आप अपनी नेक सलाह अपने पास ही रखो समझे।” जगदीश खिस्याते हुए बोला। अनवर दूसरी सिगरेट सुलगाने के बाद फिर बोला–“कम्बख़त भूरे लाल या तो कहीं भाग गया है या फिर कहीं मर खप गया होगा क्योंकि पिछले हफ़्ते से उसने कोई वारदात भी नहीं की। प्यारे दो दिनों में तुम उसे कहॉ से लाओगे फ़िर जो हश्र होगा तुम्हारा जग ज़ाहिर है। अनवर ने यह बातें इस तरह कही कि जगदीश भड़क गया और मेज़ पर हाथ हाथ मारता हुआ बोला”वह साला अगर मर भी गया होगा तो भी उसे मैं पैदा करूॅगा और ......तीस हज़ार रूपयों का सरकारी इनाम और तरक्क़ी ज़रूर लूगां।”

“शाबाश डटे रहो।”

इतना कहकर उसने जोर का क़ैक़हा लगाया और सिग्रेट के धुंये में दो–तीन फल्ले बनाने के बाद उठकर वहां से चला गया।

अनवर के जाने के बाद जगदीश आंखे बन्द कर के कुछ देर बैठने के बाद उठकर कमरे में टहलने लगा। बाहर अन्धेरा बढ़ रहा था, उसने घड़ी देखी तो रात के आठ बजने वाले थे। टहलते–टहलते उसकी नजर भूरे लाल की तस्वीर पर पड़ी तो उसे कुछ देर तक घूरने के बाद कुछ सोचते हुए फिर टहलने लगा। वह उस वक़्त चौंका जब थाने

के टाईमकीपर ने घंटा बजा कर रात के नौ बजने का एलान किया तो वह तेज़ी से कमरे से निकल कर मोटर साईकिल पर बैठा और फिर शहर के बाहर वीरान इलाकें के सन्नाटे को चीरती हुई मोटर साईकिल धीरे–धीरे आगे बढ़ रही थी। काफी दूर जाने के बाद सड़क के किनारे आम और महुआ के पेड़ों के नीचे एक आदमी नज़र आया जो कन्धें पर लाठी रखे हुए जा रहा था। उसे देख कर जगदीश के होठों पर एक भयानक मुस्कुराहट रेंगी। उसने मोटर साईकिल की रफतार बढ़ाई मगर उसके दिमागं में होने वाली दौड़ की रफतार कहीं ज्यादा ही थी। उसका हाथ कमर में लटके रिवालवर पर पड़ा फिर अन्धेरे में ताबड़तोड़ फायरों की आवाजों से रात का सीना छलनी होने लगा और अन्धेरा भयानक होता चला गया।

दूसरे दिन शहर के सारे बड़े छोटे अख़बार इन्सपेक्टर जगदीश कुमार की भूरेलाल जैसे ख़तरनाक मुजरिम की मुठभेड़ की दास्तान व्यान कर रहे थे। अख़बारों के कालम के कालम जगदीश कुमार की दिलेरी और बहादुरी की दास्तान से भरे हुए थे। जिस तरह मुख़बिर की ख़बर पर जगदीश ने जंगल में अकेले ही भूरे लाल से मुकाबला कर के उसे मार गिराया। भूरेलाल का चेहरा गोलियों से इस तरह बिगड़ा हुआ था कि उसके कारनामों से ज्यादा भयानक दिख रहा था। जगदीश की ऐठी मूछें और ऐंठ गई थी।

करीब एक महीने के बाद मेज़ पर रखा हुआ फोंन सुबह ही सुबह बज उठा। इन्सपेक्टर जगदीश जो आराम से आंखें बन्द करे हुये कुर्सी पर बेठा हुआ था, उसने बुरा सा मुँह बनाते हुए फ़ोन का रिसीवर उठाया मगर दूसरी तरफ से कमिश्नर की कड़कदार आवाज सुनते ही वह उछल कर खड़ा हो गया और घबराहट में फ़ोन को ही सैलूट मार बैठा। हकलाती आवाज में उसने कहा–'यस, स सर–सर ज–जी मैं फौरन हाज़िर होता हूँ। इतना कहते ही उसने रिसीवर रखा और तेज़ी से बाहर निकला। जब वह कमिश्नर के आफिस पहुँचा तो वहाँ सी.आई.डी. डिर्पाटमेंट के लोगों और रोज़ से ज्यादा राईफल धारी सिपाहियों को देख कर वह चौक उठा। जब वह पोर्टिलों में अपनी गाड़ी खड़ी करते कमिश्नर के कमरे में दाख़िल हुआ तो उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे ज़लज़ला आ गया हो, कमरे में कमिश्नर की मेज के सामने भूरेलाल हथकड़ी से बधा हुआ सी.आई.डी. इन्सपेक्टर शर्मा और दूसरे सिपाहियों के घेरे में खड़ा हुआ था। जगदीश का सिर घूम गया उसे महसूस होने लगा जैसे कमरे की दीवारे, छत गिर रही हो और वह सिर के बल उस मलवे में दबता चला जा रहा हो। (साभार, हिन्दूस्तान)

प्यार के गीत

प्रो0 एस0के.लिडिल
ई.सी.सी.कॉलेज, इलाहाबाद

प्यार के गीत सब मिल के गाया करो
दास्ताने मुहब्बत सुनाया करों
मारा दुख दर्द का दर पे आये तेरे
मिलके दुख दर्द उसके मिटाया करो।

वो जो भटके हुए हैं किसी राह पर
रास्ता ज़िंदगी का दिखाया करो
ये जहॉ तो दुखों का एक अम्बार है
दिल किसी का न यूँही दुखाया करो।

भूखा प्यासा मिले जब कोई राह में
मेंज़बॉ उसको अपना बनाया करो
रूठ जाये कभी तुझसे भाई तेरा
आगे बढ़कर गले से लगाया करो।

ये दुनिया खुदा का एक दरबार है
अपनी फरयाद उसी को सुनाया करो
सारे दुख दर्द एक रोज मिट जायेंगे
बारहा उसकी हैकल मेंआया करो।

भेस में जाने किसके वो मिल जायेगा
बे सहारों को दिल से लगाया करो
तुम न हिन्दू न मुसलिम न ईसाई हो
बस तुम इन्सानियत को निभाया करो।

न खुदा ही मिलेगा न विसाले सनम
दर्द दुशमन का भी न बढ़ाया करो
जब मिले कोई तुम से कहीं प्यार से
प्यार का तुम भी दरिया बहाया करो।

प्यार के गीत सब मिलके गाया करो
दासताने मुहब्बत सुनाया करो।

बुजुर्गो को प्यार और सहानुभूति भी चाहिए

इससे अधिक निंदनीय और क्या हो सकता है कि बड़े–बूढ़ों का अपना ही खून कुछ इस तरह भुलाने बिसराने व उपेक्षित समझने लगा है कि जैसे कोई रिश्ता–नाता ही नहीं रहा हो।

जिन बुजुर्गो के पास संचित धन नहीं होता उनकी तो भारी उपेक्षा की जाती है। कुछ संतानें तो माता–पिता का धन हड़प करके उन्हें घर से बाहर निकाल देती हैं।

0 सुप्रीया

माता–पिता को देवता तुल्य मानने की परंपरा वाले देश भारत में इन दिनों बुजुर्गो से जो सलूक होने लगा है, वह किसी से छिपा नहीं है। इससे अधिक निंदनीय और क्या हो सकता है कि बड़े–बूढ़ों का अपना ही खून कुछ इस तरह भुलाने बिसराने व उपेक्षित समझने लगा है कि जैसे कोई रिश्ता–नाता ही नहीं रहा हो। ऐसे में क्या बुजुर्गो के प्रति आदर और सहानुभूति की परंपरा को पुनः कायम नहीं किया जाना चाहिए ताकि वे अपना शेष जीवन सूखपूर्वक व्यतीत कर सकें।

भारत में 70 वर्ष से ज्यादा उम्र वाले लोगों की संख्या सात करोड़ से भी अधिक है। हमारे यहां तो बुढ़ापा शीघ्र ही आ जाता है क्योंकि गरीबी और कुपोषण की वजह से शरीर प्रौढ़ावस्था से ही शिथिल होने लगता है। 55–60 तक पहुंचते–पहुंचते तो अंग–अंग ढीले पड़ जाते है। काम करने, सोचने और समझने की शक्ति ढीले पड़ जाते है। काम करने की, सोचने और समझने की शक्ति क्षीण हो जाती है। वैसे बुढ़ापा जीवन का अनिवार्य क्रम है और यदि व्यक्ति इससे पूर्व नहीं मरता है तो सभी को बुढ़ापा आना है। किंतु विडम्बना यह है कि आज हमारे नैतिक मूल्य इतने अधिक गिर चुके हैं कि जन्म देने वाले माता–पिता को भी हम बोझ समझने लगे हैं। इस बारें में दो राय नहीं कि आज के अधिकांश कमाऊ पूत अपने बुजुर्ग माता–पिता को केवल बोझ ही समझते हैं। बूढ़े मां–बाप को दो वक्त की रोटी भले ही दे दें पर

उनके पास दो पल बैठकर उनका सुख–दुख सुनना इन्हें अखरने लगा है। वे यह भूल जाते हैं कि उनकी उम्र भी कभी ऐसी ही होगी और उनके अपने बच्चे ही उनसे ऐसा ही बर्ताव करेंगे जैसा वे अपने बुजुर्गो से कर रहे है।

बच्चें के जन्म लेते ही माता–पिता सुनहरे सपने संजाने लगते हैं कि उनका बच्चा बड़ा होकर डाक्टर, इंजीनियर, अफसर आदि बनेगा। और अपने माता–पिता की बुढ़ापे में सेवा करेगा। अपने इस अटूट विश्वास के कारण माता–पिता अपने बच्चों को अच्छे से अच्छा लालन–पालन करते हैं, पढ़ाते–लिखाते हैं, खुद अभावों में रहकर भी बच्चों को किसी वस्तु का अभाव महसूस नहीं होने देते। इस प्रकार माता–पिता अपनी सारी कमाई बच्चें के भविष्य निर्माण पर खर्च कर देते हैं लेकिन बदले में माता–पिता को क्या मिला? तिरस्कार, अपमान और उपेक्षा। क्या इसी के लिए मां–बाप संतान को जन्म देते हैं कि जब बुढ़ापे में उन्हें सहारे की जरूरत हो तो उन्हें घर से निकाल कर बेसहारा कर दिया जाए। जिन माता–पिता ने हमें जन्म दिया और पढ़ा–लिखा कर अपने पैरों पर खड़े होने लायक बनाया उसकी सेवा से विमुख होना क्या कृतघ्रता नहीं है।

वृद्धावस्था उस समय बहुत अखरती है जबकि अपनी ही संतानें उनके साथ नौकरों जैसा व्यवहार करती हैं तथा बहुंए बात–बात में ताने और झिड़कियां सुनाने लगती है। इतना ही नहीं आधुनिक पत्नियां अपने पतियों को उल्टी–सीधी पट्टी पढ़ाकर या तो स्वयं पति और अपने बच्चों के साथ अलग गृहस्थी बसा लेती हैं अथवा बूढ़ों को निकाल देती हैं। ऐसी स्थिति में बूढ़े मां–बाप पर क्या बीतती हैं, यह हर भुक्तभोगी अच्छी तरह जानता है।

उम्र जिन्दगी की घट रही है।

मुन्नू आनन्द

उम्र जिन्दगी की घट रही है।
और मेरे घर मिठाई बंट रही है।
हादसों का दौर गरीबी और बेरोजगारी
मुझे ही ख़बर है, मेरी किस तरह कट रही है।
बेदर्द जमाना जिन्दगी की दुआएं देता है,
पर मुझसे तो एक ही रात भी नहीं कट रही है।
क्या बतायेगा ज्योतिषी मुझे, जिन्दगी के बारे में,
मेरे हाथों की लकीरें तो पहले ही मिट रही है।
क्या लिखूं मैं अपनी जिन्दगी और जमाने की बाते,
कि तंगहाली में मेरी सोचें भी सिमट रही है।

बहुत कम माता–पिता सौभाग्य शाली होगें, संताने बुढ़ापें में उनकी सेवा कर रही होगीं लेकिन ज्यादातर माता–पिता तो बुढ़ापें में शोषण और उपेक्षा के ही शिकार हैं। जो बूढ़ें इस अपमान और उपेक्षा को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे आत्महत्या तक कर लेते हैं क्योंकि वे अपमानपुर्ण जिंदगी से मौत बेहतर समझते हैं।

जिन बुजुर्गो के पास संचित धन नहीं होता उनकी तो भारी उपेक्षा की जाती है। कुछ संतानें तो माता–पिता का धन हड़प करके उन्हें घर से बाहर निकाल देती हैं। परिणामस्वरूप बुढ़ापें में वे भीख मांगने पर मजबूर हो जाते हैं और दर–दर की ठोकरें खाते रहते हैं। कई बार बच्चें बूढ़ें बाप को झिड़क देते हैं और बेचारा बूढ़ा बाप अपना अपमान चुपचाप सहन करता चला जाता है। आखिर वृद्ध माता–पिता की इतनी उपेक्षा क्यों? वे भी परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य है। क्या वे आर्थिक उत्पादन करने योग्य नहीं रहे हैं महज इसलिए उनकी उपेक्षा किया जाना उचित है? क्या वृद्ध मां–बाप को रोटी और कपड़ा देने से ही संतानों के कर्तव्यों की इतिश्री हो जाती है? वृद्धों को रोटी, कपड़ा ही नहीं प्यार और सहानुभूति भी चाहिए।

क्या कभी संतानों ने अपने वृद्ध माता–पिता की परेशानियां जानने का प्रयास किया है? इन सब बातों को जानने का समय भला किसके पास है? आज मां–बाप के महत्व को कौन स्वीकारता है? कमाऊ पूत और उनकी पत्नियां अपने आगे इनको कुछ नहीं समझते और बूढ़ों को सबसे दयनीय प्राणी के रूप में समझते हैं। हर बार उन्हें प्रताड़ित किया जाता है और उनसे ऐसे कार्य लिए जाते हैं जो उनके सम्मा के खिलाफ हैं।

हमें वृद्धों के प्रति अपना दृष्किोण बदलना होगा। वृद्धों की परिवार में महत्वपूर्ण भूमिका है, उन्हें बोझ मानना उचित नहीं है। उनके पास अनुभव व ज्ञान का अथाह भंडार है जिससे युवा पीढ़ी बहुत कुछ सीख सकती है। परिवार में बड़े बूढ़ों की मौजूदगी काफी महत्व रखती है। उन्हें उपेक्षा की नहीं आदर, सम्मान और प्यार की जरूरत है और यह उन्हें मिलना ही चाहिए।

रिश्तो का कैंसर

नौलाख अहमद सिद्दीकी

जीवन में कभी कुछ घटनाएं होती है जो पूरे जीवन पर छाप छोड़ जाती है। यहीं हुआ शशि के साथ उसे याद है जब वह नौ वर्ष की बालिका हुआ करती थी। तब कैसे उसे एक दिन दूर के रिश्तेदारी के भइया ने उसे अकेली देखकर धर पकड़ और जबरदस्ती चूमने लगे कि उसे देखकर आज भी उसका खून खैाल उठता है।

शशि दस वर्ष की एक चुलबुली चंचल लड़की है जो अब जब किसी की गोदं में बैठने को मचलती है तो यह कहकर उसे छिड़क दिया जाता है कि तुम अब बड़ी हो गयी हो। नन्हीं काजल की समझ से बाहर वह अचानक चार दिन में ही बड़ी कैसे हो गयी।

लड़की है परिवार में सबसे छोटी होने के कारण उसे सभी से अपार स्नेह मिलता था। दादी, बुआ, चाचा, चाची सभी उसे दुलारते। शशि को यदि चिढ़ थी तो अपने एक चाचा से जो गाहे बगाहे उसे पकड़कर अपना स्नेह प्रदर्शित करने की ताक में लगे रहते। पर इस स्नेह का रूप जाने और से अलग हुआ करता था। सबके सामने तो चाचा बेचैन निगाहो से ही घूर कर काम चला लेते। कभी वह भूले भटके हाथ लगती थी तो निश्चय ही चाचा उसे विछौने पर पटक पर जबरदस्ती चूमते, कपड़े के नीचे हाथ फेरते और कभी कभी इतने विभत्स हो जाते की शशि डर कर रोने लगती। एक दिन उसे रोते देख कर उसकी दादी ने कारण पूछा तो उसने भोलेपन से सबकुछ कह दिया। उस दिन के बाद चाचा अहाते में दुबारा नहीं दिखायी पड़े। घर परिवार का मिलना बंद हो गया। अब जब वह किसी की गोंद में बैठने के लिए मचलती तो उसे कस कर झिड़क दिया जाता कि अब तुम बड़ी हो गयी हो। नन्हीं शशि के समझ से बाहर रहा कि वह चार दिन में बड़ी हो गयी।

परिवार में ऐसी घटनाओं संबंध लगभग हर दूसरी तीसरी लड़की से होता है। लगभग हर दूसरे तीसरे परिवार में ऐसी घटनाएं घटती है। दुख की बात यह है ऐसी घटनाओं में अपराधी परिवार का ही कोई सदस्य अथवा अत्यन्त निकट व्यक्ति होता है।

युवा हो रहे पुरूष रिश्तेदार या फिर परिपक्व पुरूष संबंधी ऐसे ही लोग होते है जिन्हें एक बार स्थान मिल जाये तो फिर वह क्या–क्या गुल नहीं खिलाते। चचेरे, ममेरे अथवा घर के रिश्तेदारों के लिए यह सब सहज होते है क्योंकि इतने दूर के सम्बंधों से उन्हें क्या मोह? एक बार परिवार में आ जाने की छूट मिल जाये तो विश्वास पात्र बनकर बड़े ही प्रेम से पीठ पर वार करेंगे।

छेड़छाड़ की ऐसी बातों में हलाल तो परिवार की छोटी बच्ची, किशोरी अथवा नवविवाहिता होती है। बड़ी ही समझदारी से ऐसे कुंठित पुरूष जब इन्हें अपना शिकार बनाते हैं तो वे जानते हैं कि छोटी बच्ची नासमझ है इसलिए उसे समझ नही आयेगा कि उसके साथ क्या हुआ। फिर यदि उसने किसी से कहा भी तो उसे दुलार का नाम देकर टाला जा सकता है। घर के युवा पुरूष नौकर छोटी लड़कियों की इस मूकता का खूब फायदा उठाते हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि दिन भर बच्ची को उन्हीं के पास रहना है। अगर वह कुछ बोली तो उसे बाद में डॉट या मारकर डराया जा सकता है। इस तरह के यह पहलू हैं जिसमें छोटी लड़की की नासमझ और भोलेपन का फायदा बड़ी ही आसानी से उठाया जाता है। माता–पिता इस बात की आलोचना भी नहीं करते क्योंकि यह बात उनकी नजर में आयी हीं नहीं। नजर आयेगी कैसे लड़की को डर जो है। यदि वह उसकी शिकायत करेगी तो वह बाद में मार खायेगी।

एक दूसरा पहलू वहीं जहॉ शिकार कि उम्र बारह से अठ्ठारह वर्ष के बीच होती है। परिवार का कोई रिश्तेतार या पड़ोसी ही अपने शिकार पर नजर रखता है। मौका पाते ही उसके साथ कोई दुर्व्यवहार कर दिया और फिर चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान लिए सबके के बीच जा बैठे। मुख पर निश्चिन्तता का भाव है क्योंकि वह जानता है लड़की भोली–भाली है। इधर शिकार हुई लड़की की हाल यह है कि वह अभी नासमझ है। कुछ डर है कुछ संकोच वश वह किसी से कहेगी नहीं और न वह कह पाती है। शोषित किशोरियां दुविधा में पड़ जाती है वे ऐसी घटनाओं का चर्चा अगर किसी बड़े से करती है तो अवश्य ही उन्हें मुक्ति मिल जाती है। लेकिन फिर परिवार और पड़ोस की स्नेह और वात्सल्य भरी दृष्टि बदल जाती हैं। इसका स्थान कठोर और रूखा व्यवहार ले लेता है। इसलिए अधिकतर किशोरियां चुप रहने में ही अपनी भलाई समझती है। और चाहकर भी अपनी दोषी को सजा नहीं दे पाती है। ऐसी घटनाओं में केवल रिश्तेदारों का हाथ होता हैं। ऐसा नहीं होता है। कुछ पुरूष मित्र इसमें माहिर होते हैं। प्रेम में

सबकुछ जायज है वाली बात के पालन में लोग बड़े ही आसानी से आज्ञाकारी की तरह पालन करते हैं। प्रेमिका ऐसी स्थिति में और भी कुछ नहीं कह सकती और जिससे कहेगी उल्टा उसे ही दोषी बताएगा।

इसका एक तीसरा पहलू भी है। जहॉ नवविवाहित को शिकार बनाया जाता है। शहरों में ऐसी घटनाएं कम ही होती है। शहरों की अपेक्षा देहातों में इसका खूब प्रचलन है। एक पुरानी कहावत है मुझे याद आ रही है 'लाजो मा वह बोले न और भाये ससुर छोड़े ना। लज्जा बस भाई की पत्नी कुछ नहीं कह पाती और भसुर इसे मौन स्वीकृति मान लेते हैं। का भरपूर पालन होता है। कहीं–कहीं तो ससूर दुलहनों पर नजर रखते हैं। यदि दुलहन मान जाये तो घर की चाभी उसके हाथ होती है। और अगर न माने तो किसी कारण उसकी पिटाई होती है। देवर, ससुर, भसुर इसमें की अगर किसी से शिकायत यदि हुई उल्टा ही दुष्सचरित्र होने का आरोप सुनना पड़ेगा। इसलिए वे भी अपनी भलाई समझ कर चुप रहती है।

ऐसी सभी घटनाएं पीड़ित युवतियों किशोरियों और बच्चेंा पर बहुत दूर तक अपना एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव छोड़ जाती है। ऐसी घटनाओं में पहले तो शर्मिदंगी और डर दोनेंा के सम्मिलित भाव होते है। अधिकतर तो लोगों के पास तो अपने साथ घटित अथवा अपनी मनःस्थिति का वर्णन करने के लिए शब्द भी नहीं होते और वे अपने को बहुत लाचार पाते हैं। यौन सम्बंधित दुव्यवहारों का भावनाओं के स्तर पर बहुत बुरा असर होता है। इसलिए कभी तो बहुत गुस्सा आता है। कभी बहुत डर लगता है। कभी इसका परिणाम इस हद तक होता है कि यही पीड़ित बच्चें या किशोरियां जब युवा और सक्षम हो जाती है। तब भी पुरूष के सहचर्य से घबराती है। उन्हें लगता है कि स्त्री–पुरूष के बीच यौन सम्बंध के अतिरिक्त और कोई सम्बंध नहीं होता है। इस कारण बहुत सी औरतें पुरूषों के साथ सहज और मजबूत सम्बंध स्थापित कर पाती है।

इन दुर्घटनाओं की शिकार हुई कम उम्र की लड़कियों का अपने से बड़ों पर से विश्वास उठ जाता हैं क्योंकि उन्हें संरक्षण की जगह विश्वासघात किया है। उंन्हें इस स्तर तक गिरा दिया है कि इसकी दोषी स्वयं है। अपनी गलती से ऐसा हुआ आदि और वे समाज के साथ–साथ अपनी भी नजरों में गिर जाने के बाद कुछ तो वेश्यावृत्ति को भी बुरा नहीं मानती हैं। और उनको खुद अपने आप को कुछ करने की मजबूर हो जाती है। जो न चाह कर भी उनको करना पड़ता है। खैर अब मैं अपनी कलम को यहीं रोकूगा और समाज के लोगों से कहना चाहूंगा कि वह इस तरह के लोगों के साथ खुला चैलेज बोल दें।

वह दिन जरूर आयेगा

○ह दिन जरूर आयेगा
जिस दिन तुम हमारे करीब होगे
हम तुम्हारे करीब होंगें
सब हमारे करीब होंगे
हम सबके करीब होंगे
वह दिन जरूर आयेगा
वह दिन जरूर आयेगा
जिस दिन दीवारें टूट जायेंगी
केवल एक ऑगन होगा
और उस ऑगन में हम सब होंगे
वह दिन जरूर आयेगा
वह दिन जरूर आयेगा
जब सबकी अंजुरी में धूप होगी
सब के चेहरे पर सूर्य की रोशनी होगी
दिशायें चिटख
दूरियॉ सिमट जायेंगी
सबका एक दर्द होगा
सुख सबका होगा
वह दिन जरूर आयेगा
वह दिन जरूर आयेगा
प्रतीक्षा करने में क्या हर्ज है
अभी तो एक ही जीवन बीता है
असंख्य जीवन भी बिताना पड,
तो कोई बात नहीं
पूजा सच्ची है तो
वह दिन जरूर आयेगा,

माह जूलाई के व्रत, त्योहार एवं साईत

पं० शम्भू नाथ मिश्रा

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

3.07 गुरूवार : चतुर्थी, भद्रा दिन में 11.33 से रात्रि 11.10 तक। वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।

6.07 **रविवार** : सप्तमी। भद्रा सायं 6.28 से, मृत्युवाण समाप्त रात्रि 11.09। सर्वा सिद्ध योग। अमृत सिद्ध योग।

9.07 **बुद्धवारः** दसमी। भद्रा रात्रि 10.14 से। वेदारम्भ वर्जित है। साग त्याग व्रतारम्भ। रवियोग समस्त।

10.07 एकादशी गुरूवारः भद्रा 8.54 तक। श्री विष्णुशयनी एकादशी सबका। सर्वार्थसिद्धयोग प्रातः 5.56 से रात्रि 4.19 तक। 8.59 के बाद जात कर्म, नामकरण, इत्यादि सभी संस्कार कराने का मुहुर्त है। शुभ कार्यो के लिए विशेष मुहुर्त है।

11.07, **द्वादसी, शुक्रवारः** एकादशी व्रत पारणं प्रदोष व्रत। चातुर्मास व्रतारम्भ।

13.07 **पुर्णिमा,रविवारः** गुरूपूर्णिमा। स्नानदान व्रत की पुर्णिमा। गुरू तथा व्यास की पूजा। सर्वार्थ सिद्ध योग रात्रि 12.32 से।

श्रावण कृष्ण पक्ष

श्रीवण मास में चातुर्मास्य व्रती को साग खाना वर्जित हे। मास पर्यन्त श्री काशी विश्वानाथ को नित्य विल्वपत्रा अर्पण। नैमित्त पार्थिवार्चनम्।

14.07 सोमवार, एकमः श्रावण सोमवार व्रत।

15.07 मंगलवार, द्वितीयाः अथून्य शयन व्रत। चन्द्रोदय रात्रि 8.29। लक्ष्मीसहित श्री विष्णु जी का पलंग पर पूजन करने से अक्षय–धन तथा सौभाग्य सुख श्री प्राप्ति होती है।

16.07 तृतीया, बुद्धवारः भद्रा दिन 9.37 से रात्रि 9.21 तक। संकष्टी की श्री गणेश व्रत। चन्द्रोदय रात्रि 9.10 बजे। पंचक प्रारम्भ दिन 11.44 से दिन 9.37 तक। जातकर्म, नामकर्ण इत्यादि संस्कार का मुहुर्त है।

17.07 चतुर्थी, गुरूवारः तीन दिनों तक शुभ कार्य वर्जित।

20.07 रविवार, सप्तमीः भानुसप्तमी। भद्रा दिन में 11.24 तक। भद्रा के बाद रेवती में पुसंवन, सीमन्त सूती स्नान, नीवन खटिया चौकी, आदि का उपयोग, नवनिर्माण, नवीनवस्त्रा धारण, वाटिका, रोपण, उत्तर दशिा की यात्राा, औषधि सेवन मुहुर्त, वाहन खरीदने का मुहुर्त।

21.07सोमवार, अष्टमीः पंचक समाप्ति प्रातः 5.35। श्रावण सोमवार व्रत।

22.07 नवमी, मंगलवारः भौमव्रत, गौरी पूजा, दुर्गा यात्राा। हनुमत दर्शनम। सवार्थ सिद्ध योग दिन 8.00 बजे तक। अमृत सिद्ध योग दिन 8.00 बजे। सभी कार्यो के लिए शुभ।

23.07 दसमी, बुद्धवारः सवार्थ सिद्ध योग दिन में 10.36 से।

25.07 एकादशी, शुक्रवारः कामदा एकादशी व्रत। रोहिणी नक्षत्रा दिन में 3.40 तक। सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, शिशु ताम्बुक भक्षण, नवीन खटिया, चौकी आदि का उपयोग, सौभाग्यवती को छोड़कर नवीनकरण सुवर्ण रत्न वाटिका रोपण, गृह प्रवेश का मुहुर्त है।

26.07 द्वादशी,शनिवारः शनि प्रदोशव्रतं (पुत्रा प्राप्ति के लिए) गृहप्रवेश मुहुर्त है।

27.07, तेरस, रविवारः शिवरात्रि व्रत।

28.07 **चतुर्दशी, सोमवारः** श्रावण सोमवार व्रत। श्राद्ध का आमवस्या। सर्वार्थ सिद्धयोग। शुक्रास्त पूर्व में प्रातः 7.57 पर।

29.07 अमावस्या, मंगलवारः स्नान–दान, अमावस्या।

लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएॅ भेजें।

2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेख्रक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।

4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे।हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

आवश्यक सूचना

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

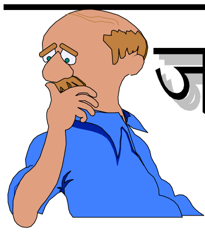

जरा हंस दो मेरे भाय

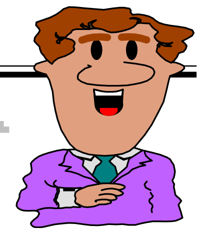

☠ राहुल (पूजा से): देवीजी, आपकी घड़ी में कितना बजा है?

पूजाः पौने दो।

राहुल : वाह, देवीजी मेरी घड़ी में भी यही बजा है आपके और मेरे विचार कितने मिलते है चलिए इसी बात पर कैन्टीन में एक–एक चाय हो जाय।

☠ राजू: यार, अब लड़किया हमें लिफ्ट ही नहीं देती।

जय : क्योंकि, तुम्हारे प्यार करने के नाम पर शोषण से लड़किया परिचित हो गयी है।

☠ एक नवयुवक ट्रेन में एक युवती के पास काफी देर से बैठा सोचता रहा कि बातचीत का सिलसिला कैसे शुरु करें आखिरकार वह काफी देर बाद हिम्मत जुटाकर बोला–"अच्छा तो आप भी इसी ट्रेन से यात्रा कर रही है।

☠नौकर : मालिक, डॉक्टर साहब आए है।

मालिक : उनसे कह दो मैं नहीं मिल सकता। अभी बिमार हूँ।

☠ ज्योतिषी : पैतिस वर्ष की उम्र तक तुम्हारे पास पैसा नहीं रहेगा और तुम दुखी रहा करोगे?

ग्राहक : उसके बाद?

ज्योतिष : उसके बाद तुम्हें उसकी आदत पड़ जाएगी।

☠ जज : तुम्हारे कितने भाई है?

अभियुक्त : जी एक।

जजः गलत बयान देते हो। अभी तुम्हारी मॉ ने कहा है कि उनके दो बेटे है।

☠नरेश : यह बैग मेरे ऊपर गिर सकता है।

सुदेश : घबराने की कोई बात नहीं। इसमें टूटने वाली कोई चीज नहीं है।

☠ एक लड़का कहीं जा रहा था। रास्ते में एक पत्थर पड़ा मिला। उस पर लिखा था–मुझे पलट दो।

लड़के ने पत्थर पलटा तो दूसरी तरफ लिखा था –जैसा था, वैसा ही कर दो। और भी ग

pkSdbkrkevdfoyykbZUesa
[kgyxkdM+ksdkHkOkks

स्टूडेन्ट्स टेलर्स, श ुन चौक की नई भेंट

कलेक्शन

Raymond

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

फोन : 2608082

ो आते होंगे।

☠राकेश : यार, लड़कियों कौन –2 से रोग होते है

सदाब : शादी के पहले–दर्दे जिगर, दर्दे नजर और शाद दर्दे कमर।

☠ परिवार नियोजन अधिकारी के घर के बाहर तख्ती लटकी थी कि ' जिन सज्जन के बच्चे हो वे किराये पर कृपया मकान लेने हेतु न मिले' यह पढ़कर एक दस वर्षीय बालक ने मकान का दरवाजा खटखटाया । जब अधिकारी महोदय जी ने मकान का दरवाजा खोला तो बालक बोला अंकल जी मुझे अपना मकान किराये पर दे दीजिए, मेरे बच्चे वगैरह तो नहीं है। सिर्फ मम्मी पापा है।

☠ टिकट चेकर : बस में सिर्फ 12 साल से कम उम्र के बच्चे ही आधे टिकट पर यात्रा कर सकते है। तुम्हारी उम्र क्या है?

बच्चा : 11 वर्ष 11 महिने 29 दिन 23 घंटे।

टिकट चेकर : तो तुम 12 साल के कब होगें?

बच्चा : जब बस से बाहर निकल जाऊगा।

☠ दो आदमी आपस में झगड़ रहे थे और एक अन्य तीसरा आदमी दोनों के बीच चल रहे झगड़े को सुन रहा था।

पहला आदमी : अगर मैं एक हाथ मार दूँ तो तुम्हारे बत्तीस दॉत बाहर आ जायेगें।

दूसरा आदमी : और अगर मैं मारुँगा तो चौसठ दॉत एक साथ बाहर आ जायेगें।

तीसरा आदमी : (हॅसकर) अरे इसे नहीं मालूम क्या कि आदमी के सिर्फ बत्तीस दॉत ही होते है।

दूसरा आदमी : मैं जानता था कि तुम बीच में जरुर बोलोगे इसी कारण तुम्हारे भी गिन लिये थे।

☠मालिक : (नये नौकर से) सुनो, भाई मुझे कल सुबह 7 बजे ही दफ्तर जाना पड़ेगा। इसलिए तुम मुझे सुबह 6 बजे ही जगा देना।

नौकर : जी मुझे घड़ी देखनी नहीं आती। जब सुबह के 6 बजे तो मुझे बता दीजिएगा मै आपकों जगा दूंगा।

LokF;ppkZ

आहार सम्बन्धी कुछ स्वर्ण सूत्र

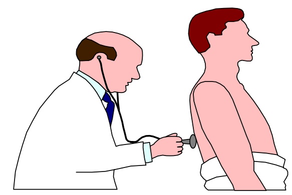

एस0पी0 सिंह
कोआर्डिनेटर, एक्यूप्रेशर एवं शोध प्रशिक्षण संस्थान, सम्मेलन मार्ग, मारवाड़ी धर्मशाला, इलाहाबाद

1.भूख या प्यास लगने पर ही कुछ खाये या पिये–

समय हो गया, किसी ने खातिरदारी में कुछ प्रस्तुत कर दिया, किसी को खातिरदारी में उसका साथ देना है, कोई चीज देखने, सूंघने या खाने में अच्छी लगती है। इसलिए ही न खायें–पियें। क्योंकि जठराग्नि या पाचक अग्नि तभी तेज होती है जब भूख या प्यास लगी हो। बिना भूख और प्यास के कुछ भी खाना पीना जठराग्नि को उसी प्रकार मन्द कर देता है जैसे सुलगती आग पर ढ़ेर सी लकड़ी रख देना या पानी डाल देना। इससे पाचन शक्ति कमजोर, अवच, कब्ज, गैस आदि कुछ भी हो सकता है।

2.भूख से थोड़ा कम खाये–कई देशी और विदेशी प्रमुख चिकित्सकों का मानना है कि सामान्य व्यक्ति जितना खाता–पिता है उसके एक तिहाई से वह जिन्दा रहता है और दो तिहाई से डाक्टर। यानी प्रायः हर व्यक्ति आवश्यकता से अधिक आहार लेता है। वह केवल रोटी, चावल, दाल को ही आहार में गिनती करता है और दिन भर जो चाय, नाश्ता, फल, दूध आदि लेता है उसकी गिनती नहीं करता।

हमारा आमाशय या जठर एक थैल जैसा होता है। एक थैले में आप गेंहू, चना, जौ, मटर आदि अनाज डालें और उसे पूरा भर कर उसका मुँह बन्द कर दें तथा उसके बाद उसको हिलाये– जो अनाज जैसा नीचे ऊपर है वैसा ही और उधर ही रहेगा। यदि वह आपस में मिलेगा भी अधिक समय लेगा फिर भी भली भॉती नहीं मिलेगा। हमारा आमाशय फैलता सिकुड़ता है उससे ही उसमें पाचक रस मिलता है तथा आहार पदार्थो में घर्षण होता है जिससे पाचन क्रिया सम्पन्न होकर आहार ग्रहणी तथा छोटी ऑत में पूर्ण पाचन के लिये आगे बढ़ जाता है। यदि आमासय पूरी तरह से भरा होगा तो वह भलीभॉति फैलने–सिकुड़ने की क्रिया नहीं कर पावेगा। परिणाम स्वरुप पेंट और शरीर में भारीपन रहेगा, भोजन देर से पचेगा और आमासय में भोजन रहेगा तो सड़ेगा और गैस बनेगी।

जिस प्रकार खूब ढ़ेर सारी आग हो उसमें आग बुझा देने वाली वस्तुयें जैसे पानी या गीली लकड़ी थोड़ी मात्रा में डालें तो वह स्वयंम जल जायेगा और यदि आग थोड़ी हो और उसके ऊपर ढ़ेर सूखी लकड़ी रख दें या ढ़ेर सा घी डाल दें तो वह बुझ जायेगी जबकि यह दोनों आग को प्रज्वलित करने वाली वस्तुयें हैं। उसी प्रकार हमारी जठराग्नि है। यदि थोड़ी मात्रा में खाया जाय तो गरिष्ठ और भारी आहार भी पच जाएगा और अधिक मात्रा में खाने पर सामान्य और हल्का आहार भी हानिकारक होगा। विडम्बना यही है जो आहार भारी और गरिष्ठ होते है वे स्वादिष्ट होने के कारण खाये भी अधिक जाते है जिसका विपरीत प्रभाव पड़ता है।

3. हर निवाले को 32 बार या कम से कम 16 बार अवश्य चबायें–ईश्वर ने या प्रकृति ने हमें 32 दॉत दिये है इसलिए प्रत्येक निवाले (कौर या ग्रास) को 32 बार अवश्य चबाना चाहिये। आज–कल की भाग–दौड़ वाली जिन्दगी में चबाने के लिए इतना समय निकाल पाना प्रायः लोगों के लिए कठिन होता है तथा आहार में रेशो व फुजलों की कमी तथा उसकी मुलायमियत भी अधिक चबाने नहीं देतीं। अतः कम से कम 16 बार भी चबाने से काम चल सकता है क्योंकि ऊपर–नीचे के दॉत एक साथ काम करते हैं। ऑतो को दॉत नहीं होते। अतः यदि हम दॉतो से पूरा काम नहीं लेगें तो वे बिना काम किये कमजोर होकर असमय टूट जायेगे और ऑते, दॉतों का भी काम करते–करते थक जायेगी और परिणाम होगा कब्ज और गैस।

बिना चबाये या कम चबा कर खाना डायबिटीज (मधुमेह) का प्रमुख कारण है। आप मधुमेह के रोगियों से बात करिये ज्ञात होगा कि अधिकांश उनमें ऐसे है जो निवाले को दो –चार बार मुँह में घुमा कर नीचे उतार देते हैं। भोजन का देर तक चबाने से दो लाभ होता है। पहला यह कि भोजन ढीला और महीन हो जाता है जिससे पचने में सुविध् ाा होती है दूसरे भोजन करते समय मुँह में लालरस (लार या स्लाइव) निकलता है जो स्वेतसार (कार्बोहाइड्रेट) वाले पदार्थो को पचाकर ग्लोज, फ्रुक्टोज में बदल देता। कार्य आप रोटी –चावल आदि स्वेतसारीय पदार्थ दाल या सब्जी के बिना सूखा खाकर देखें थोड़ी देर में मीठा लगने लगेगा क्योंकि मुँह का लार स्वेतसार या मांड़ को ग्लोकोज/फ्रुक्टोज में बदलने लगता है। यदि कम चबाया जाता है तो यह कार्य पैंक्रियाज को अधिक इन्सुलिन बना कर करना पड़ता है। परिणाम स्वरुप वे थक जाते हैं। और इन्सुलिन बनाना कम देते हैं और डायबिटीज या मधुमेह रोगा हो जाता

है। चबा–चबा कर खाने की आदत डालकर मधुमेह, कब्ज, गैस आदि से न केवल बचा जा सकता है वरन हो जाने पर इनको ठीक भी किया जा सकता है।

अमेरिका में चबा–चबा कर खाने का एक सिद्धात बन गया है जिसे फ्रैंचरिज्म कहते हैं। बात उन दिनों की है जब टी.बी. का समुचित इलाज नहीं था। □फ्रेंचर नाम के एक सज्जन को टी.बी. थी और डाक्टरों ने उन्हें असाध्य घोषित कर दिया था। उन्होनें हर कौर को डेढ़ सौ बार चबाकर न केवल अपना रोग ठीक किया वरन भारोत्तोलन प्रतियोगिता भी जीती। तब से उनके नाम पर उक्त सिद्धात बन गया। अंग्रेजी में एक कहावत है–

Eat your Milk and
Drink Your Food

दूध को खाओ और भोजन को पियों। दूध भी मुँह में रोककर भोजन की तरह पीना चाहियें। भोजन को चबा–चबा कर इतना पतला कर देना चाहिए कि पिया जा सके।

4. नाश्ता या भोजन के साथ पानी न पिये या कम से कम पिये– जैसा कि हम ऊपर चबा–चबा कर खाने में लिख आये हैं कि श्वेतसार या कार्बोहाइड्रेट का पाचन मुँह के लार से होता है तथा आमाशय और ग्रहणी में अनेक प्रकार के पाचक रस, भोजन में मिलते हैं जो भोजन के अन्य तत्वों जैसे प्रोटीन, चिकानई आदि को पचाते है। यदि हम भोजन के साथ पानी पी लेते है तो ये पानी में घुल कर पतले हो जाते है तथा शीघ्र आगे बढ़ जाते है। परिणामस्वरुप भोजन का पाचन समय से भली–भॉति नहीं हो पाता और देर तक पेट में पड़ा सड़ता है जिससे कब्ज और गैस बनता है। अतः दाल या सब्जी में जो पानी होता है, भोजन के समय भोजन को ढीला बनाने के लिये उतना ही पर्याप्त है। अतिरिक्त जल हानिकारक होता है, और गरम भोजन के साथ यदि फ्रिज या बर्फ मिला पानी हुआ तो दुगुना हानिकारक हो जाता है, जठराग्नि को गंदा कर देता है या बुझा देता है। हॉ, यदि ऐसा भोजन किया जा रहा है जिसमें तरल पदार्थ नहीं है तो थोड़ा जल पिया जा सकता है। आयुर्वेद में हजारो वर्ष पूर्व कहा गया है कि भोजन के अंत में पिया हुआ जल विष के समान होता है। अतः केवल एक दो घूट गला साफ करने भर को ही पियें।

भोजन करने के दो या कम से कम एक घंटे बाद जल पीना प्रारम्भ करें और थोड़ा–थोड़ा जल दूसरे भोजन के एक या आध घंटे पूर्व तक पिये। पर्याप्त जल पीना भी आवश्यक है। जल पीने का सर्वोत्म समय प्रातः उठते ही सवा लिटर तक या उबकाई आने तक पिये और उसके बाद पवन। एक घंटे तक कुछ भी न खाये, पिये। यह उषापान कब्ज, गैस आदि अनेक रोगो को नष्ट करने में सफल है। हमारी इस उषापान विधि को जापान से इन दिनों जल चिकित्सा के नाम से प्रचारित किया जा रहा है।

बहुत कम या बहुत अधिक जल पीना भी उसी भॉति हानिकर है जैसे भोजन अति ठंढा जल हानिकारक होता हैं। कुआ या घड़े का जल जितना ठंढा होता है वही पर्याप्त है। 40–50वर्ष की आयु के बाद तो थोड़ा–थोड़ा गुन–गुना जल पिया जाता रहे तो शरीर में पर्याप्त गर्मी बनी रहेगी। एकआध बार साधारण ठढ़ा जल पीते रहने चाहिए ताकि केवल गरम पानी की आदत न पड़े जाये।

5. फ्रिज का या बर्फ मिला पानी और चाय से यथा सम्भव बचें– फ्रिज का पानी पीने से शरीर का ताप कम हो जाता है और चाय पीने से बढ़ जाता है। इस घटे या बढ़े ताप को शरीर सामान्य बनाता है जिसमें जीवनी शक्ति व्यर्थ नष्ट होती है। अति ठढ़ा पानी पाचन ाग्नि या जठराग्नि को मंद कर देता है तथा गर्म भोजन के साथ दॉतो को भी क्षति पहुॅचाता है।

6.वहीं वस्तुयें खाये–पियें जो स्वास्थ्यकर हो –

जीवन दो प्रकार की वस्तुओं, परिस्थितियों से वास्ता पड़ता है। एक ज्ञेय दूसरा प्रेय। ज्ञेय वह है जो हितकारी हो भले ही आहार–व्यवहार में कुछ अरुचिकर लगे प्रेय वह है आहार–व्यवहार में तो रुचिकर लगता है किन्तु उसका प्रभाव अहितकारी होता है। हमारा दैनिक आहार वही हो सकता है जो ज्ञेय हो। जो प्रेय हो वह कभी–कभार और अल्प मात्रा में ही लिया जाना चाहिये। प्रयास यह करना चाहिए कि जो ज्ञेय हो वही प्रेय भी हो। उसे ऐसे तैयार किया जाय, ऐसे परोसा जाय कि ज्ञेय और प्रेय दोनों हो।

vko';drk gS

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली एवं राजस्थान में

0 संवाददाता 0 विज्ञापन एजेंट
0 विज्ञापन एजेंट 0 ब्यूरो 0विक्रय एजेंट

हमें टिकट लगें जबाबी लिफाफे के साथ लिखेंअथवा सम्पादकीय कार्यालय पर मिलें:
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

मूंफली खाइए डायबिटीज भगाइए

शिकागो! हाल ही में किए गए एक अध्ययन में बताया गया है कि गिरीदार फल और मूंगफली खाने से डायबिटीज का खतरा कम हो जाता है। अमेरिकी विज्ञानियों का कहना है कि खासकर महिलाओं के लिए यह बेहद फायदेमंद हैं।

मूंगफली और गिरी में असंतृप्त वसा के साथ कुछ दूसरे पोषक तत्व होते हैं। ये चून में इंसुलिन के स्तर को संतुलित रखने में सहायक होते हैं। मालूम हो कि अमेरिका में डेढ़ करोड़ और दुनिया भर में साढ़े तेरह करोड़ लोग डायबिटीज से पीड़ित हैं।

1980 से 84 हजार महिलाओं पर अध्ययन के बाद विज्ञानियों का कहना है कि हफ्ते में पांच या इससे अधिक बार 28 ग्राम मूंगफली और गिरी खाने वाली महिलाओं को डायबिटीज से पीड़ित होने का खतरा 27 फीसदी कम हो जाता है। हर हफ्ते खाने में 141 ग्राम मूंगफली तेल इस्तेमाल करने वाले लोगों को डायबिटीज से पीड़ित होने की आशंका 21 फीसदी कम हो जाती है।

कुत्ते के साथ रहिए और सेहतमंद होइए

पालतू कुत्ते और बिल्लियों के साथ रहने से लोग सेंहतमंद रहते हैं। दुनिया भर में कई अध्ययनों से इसकी पुष्टि भी हो चुकी है लेकिन इन दिनों इटली के डॉक्टर बीमार बच्चों को डॉग थेरेपी देने में जुटे हुए हैं। उनका मानना है कि इससे बीमार बच्चे स्वस्थ हो सकते हैं। रोम से थोड़ी ही दूर पर स्थित ऑस्टिया के ग्रेसी हॉस्पिटल में दा कुत्ते बीमार बच्चों के साथ खेलते हैं। इसके बेहद संकरात्मक और उत्साहजनक परिणाम निकले हैं। मतलब साफ है कि डॉग थेरेपी से बीमार बच्चे स्वस्थ हो रहे है।

खिलाखिलाकर हंसने वाला व्यक्ति रोगमुक्त होता है

विएना। खिलखिलाकर हंसने वाला व्यक्ति रोगमुक्त होता है। विज्ञानियों ने भी यह साबित कर दिया है कि हंसने से तनाव दूर होता है। इन दिनों यूरोप के बाजारों में एक अदभुत सीडी की मांग जोर पकड़ रही है। दरअसल इस सीडी में मशहूर हस्तियों को हंसते हुए दिखाया गया है। ऑस्ट्रियन सोसायट फॉर डिप्रेशन रिलेटेड इलनेस ने विज्ञानी तरीके से यह सीडी तैयार की है। सोसायटी का मानना है कि सीडी लोगों को तनाव और अवसाद मुक्त रखने में बेहद सहायक है। बीस मिनट के इस सीडी से लोगों का भरपूर मनोरंजन होता है। सीडी बनाने वालों विज्ञानियों का कहना है कि हंसना संक्रामक रोग है।

जब आप किसी को हंसते हुए देखते है तो खुद ब खुद हंसने लगते है। सोसाइटी के डॉक्टर हरमन कॉटिक का कहना है कि अवसाद में रहने वाले लोगों के लिए हंसना निहायत जरूरी है। हंसते वक्त वे सब कुछ भूल जाते हैं। तनाव और अवसाद का उन्हें पता ही नहीं चलता।

म्यूजिक सुनेंगी मुर्गियां

मेनहाईम। पश्चिमी जर्मनी के मेनहाईम शहर में मुर्जात कार्यक्रम में मुर्गियों के अंडे देने की क्षमता पर संगीता के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। इसके लिए एक खास तरह का संगीता तैयार किया गया है। मेनहाईम नेशनल थिएटर की प्रवक्ता के अनुसार दो हफ्तें के इस समारोह के मध्य में 3 से 8 दिसम्बर तक 3000 मुर्गियों पर यह वोल्फगांग एमेडस द्वारा तैयार किया गया संगीत का नुस्खा आजमाया जाएगा। इनसे प्राप्त होने वाले अंडों को मुजार्त में शामिल नहीं की गई मुर्गियों के अंडो से तुलना करके देखा जाएगा।

इधर—उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खब्रें जो आपके संज्ञान में हो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खब्र को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र—व्यवाहार के पते पर।

प्रेरणा का दान

✍डॉ0 नरेश कुमार गौड़ (अशोक)

पिछले अंक में आपने पढ़ा– एक लड़के को कुछ लोग दौड़ाते है–पकड़ो.पकड़ो। राजन उस नवयुवक को पकड़ लेता है। उसे अपने साथ छः वर्ष पूर्व इसी प्रकार की घटी घटना की याद आती है।

अब आगे–

'बस कीजिये बस जेलर साहब, आपका यह दर्शन मिथ्या है। भले ही आपका यह दर्शन बड़े–बड़े भीमकाय ग्रन्थों की शोभा हो किन्तु भला समाज में इसका क्या महत्व? हो सकता है कोई व्यक्ति गंगा में स्नान करके आध्यात्मिक दृष्टि से पवित्र हो जाता है किन्तु क्या सामाजिक व्यवहार में भी ऐसा ही है. ...। समाज में जो व्यवहारिक नहीं, उसे अंगी–कार करना सर्वथा असंगत एवं अनुचित है। उसने दृढ़ता पूर्वक झुझलाकर कहा था–"बेटे। यद्यपि तुम्हारा ऐसा सोचना निर्थक नहीं तथापि ऐसा सोचकर कि कर्तव्य विमूढ़ होकर बैठना भी उचित नहीं। आखिर तुम जैसे सुयोग्य एवं शिक्षित व्यक्ति ही तो सामने आकर समाज में फैली हुई इस भ्रान्ति का परिष्कार कर सकते है...।" उन्होंने उसे समझाते हुए कहा था।

"यद्यपित यह सम्भव है तथापित क्या अकेला चना भाड़ फोड़ सकता है।"

डूबते को तिनके का सहारा मिला और उसके उस वक्तव्य से आश्वस्त होते हुए जेलर ने उसे भविष्य के प्रति विश्वास दिलाते हुए सहानुभूति पूर्वक कहा था, "नहीं बेटे ऐसी नहीं सोचते। प्रयास करो सफलता तुम्हारें कदल चूमेगी। तुम्हीं अपने हृदय पर हाथ रख कर सोचों क्या वास्तव में तुम जेल जीवन से प्रसन्न हो?"

क्यू नहीं देखिये न यहां कोई मुझे भाई कहता है, कोई मित्र और आपने तो बेटा ही बना लिया। जहां इतने सारे सम्बन्धित एक साथ हो वहां तो कोई अभागा ही अप्रसन्न रह सकता है। इसके विपरीत वाहर जल कोलाहल मेंभी रहता है। राजन एकाकी ..... उस एकाकी पन में लिमता है अभाव–अभाव चिन्ता से सम्बध ध कराता है और चिन्ता चिता से ... और चिता का भय मानव का शान्ति के स्वरूप के

सौन्दर्य से अभिव्यक्ति होने से विमुख रखती है और इस विमुखता से परे रहकर ही सुख और आनन्द की कल्पना की जा सकती है। उसके इस भावुकता पूर्ण कथन से जेलर साहब तो हतप्रभ रह गये थे किन्तु उनकी बेटी रक्षिता, जो अभी तक चुपचाप दोनों के बाद विवाद में आनन्द ले रही थी ने राजन में एक विद्वता देखी..। उसने उसमें एक अपूर्व साहस और विश्वास देखा और देखा उस साहस और विश्वास के नीचे दबा राजन का स्वाभिमान साथ ही साथ अपूर्व आकर्षक व्यक्ति में गुंफित निश्चल निष्कपअ व्योहार जिसमें उसकी वाकपटुता चार चांद लगा रही थी। वह वास्तव में राजन के इन गुणों पर रीझ गई थी। रक्षिता मुस्करा कर अपने पिता की ओर देखकर राजन के स्वाभिमान को धिक्कारते हुए बोली, "पिता जी व्यर्थ ही क्यों समय नष्ट कर रहे है, आप ? समाज से संघर्ष वे करते है, जिनमें पुरूषत्व होता, पुरूषत्व हीन पुरूष केवल तर्क के द्वारा अपने को संघर्ष से दूर रखते है।"

"क्या कहा मुझमें पुरूषत्व नहीं?"

हां, और क्या समझूं? इतना विवेक होते हुए भी सघंर्ष से विमुखता का कारण ..? रक्षिता ने दृढ़ता पूर्वक उसकी ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे किन किन मोड़ो से होकर गुजरना पड़ा है, शायद तुम्हें नहीं पता...। तुम होती तो सम्भवतः आत्म हत्या...।"

छीः छीः छीः तुम इस स्तर तक सोच सकते हो, तुम कायर हो, रक्षिता ने कहा। रक्षिता में उसने अखण्ड विश्वास और जीवन के प्रति अटूट श्रद्धा की ज्योति देखी। उस समय उसे वह साक्षात सौन्दर्य की प्रतिमा लग रही थी।

रक्षिता की स्वाभिमान और विश्वास भरी बातों ने एक बार पुनः उसके उसमें सुप्त आत्म गौरव जगा दिया। उसने मन ही मन निश्चय किया था कि वह एक बार पुनः अपने को प्रतिष्ठित करने के लिए संघर्ष करेगा और उसने रक्षिता की ओर मुड़ कर कहा– रक्षिते, देखो, यत्न करूंगा यदि सहयोग मिला तो । अपने में आत्म विश्वास जगाओं, अपने स्वाभिमान की रक्षार्थ। रही सहयोग की बात तो तुम अब अकेले नहीं हो, तुम्हारे साथ मैं हूँ, पिता जी है और..। "वाह बेटी वाह, तुमने मेरा आधा काम पूरा कर दिया और बेटे राजन तुमसे बस इतना ही कहना है कि अपने चाचा की लाज रख लेना...। किसी भी परिस्थिति में विचलित न होना। जब भी तुम पर कोई विपत्ति या कठिनाई आये तो उसके निराकरण हेतु तुम्हारे लिए मेरे घर का द्वार सदैव खुला है। अब जाओं ईश्वर तुम्हें सफलता प्रदान करे और हां ये लो कुछ पैसे रख लो.

. . ”

“नहीं, नहीं। जेलर साहब मैं भिखारी नहीं। गरीब अवश्य हूं।” राजन का सुप्त स्वाभिमान जाग उठा। यह कहते हुए कमरे से बाहर जाने के लिए तेजी से द्वार की ओर बढ़ा।

“रूकों राजन मेरी बातों का अर्थ गलत मत लगाओ। मैनें तुम्हें बेटा कहा है। अब तुम्हारें विषय में सोचना मेरा नैतिक कर्तव्य है। तुम्हें इसे लेना ही होगा।” नहीं नहीं जेलर साहब ऐसा नहीं होगा। मुझे अपने पैरों पर खड़ा होने का अवसर दीजिए। राजन के विनय एवं दृढ़ता से कहा।

“रख लो राजन, पिता जी ठीक कहते है, भले वाद में इस धनराशि को लौटा देना।” रक्षिता ने मुस्कराते हुए स्नेह पूर्वक उसकी ओर देखते हुए कहा। आखों से आखें चार हुई और उसे बाध्य होना पड़ा था पैसे लेने के लिए। उसने शरारतपूर्ण अन्दाज में कहा था तब ‘रक्षिते। तुम कहती हो तो लिए लेता हूँ। अपनी एक मात्र सहयोगिनी की बात तो रखनी ही होगी? वह उन पैसों को लेकर एक बार पुनः निकल पड़ा था इस विश्व में विचरने के लिए। उसे एक बार पुनः उन्हीं परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ रहा था, जिनसे वह प्रथम बार कारगार से मुक्त होने के पश्चात गुजरा था। वह परिस्थितियां उसे पुनः अपराध करने के लिए बाध्य करने लगी थी। न जानें क्यों अब जब भी वह अपरोधोन्मुख होता तो उसके सम्मुख रक्षिता का वह सुन्दर मुस्कराता मुख, यौवन के समस्त उपादानों से सुगठित उसका सौम्य शरीर तथा उसका वह निश्चल प्रेमपूर्ण व्यवहार आंखों के सामने नाचने लगता और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि अब उसे जेलर साहब से न जाने क्यों भय लगने लगा था? वह सोचता कि यदि उसे पकड़ लिया गया तो उसे पुनः जेलर साहब के समझ जाना होगा। क्या सोचेंगे वे? तथा वह किस मुख से उन्हें फिर चाचा कहेगा? यहीं सब भावनांए थी जो उसे अपराध वृत्ति से विलग रखती और वह यह सोचने लगता कि वास्तव में स्नेह और प्रेम विश्व की ऐसी अनमोल निधि है, जिनके समक्ष विश्व की समस्त शक्तियें को पराजित होना पड़ता है।

इन्हीं परिस्थितियों में तीन महीने व्यतीत करके वह इलाहाबाद से अपने गृह नगर बनारस यह सोचकर चला आया कि वहां उसे केवल राजन के रूप में ही जाना जाना जाता है। अतः वहां अपना स्थान बनाने में उसे कम संघर्ष करना पड़ेगा।

मन्दिरों ने नगर वाराणसी आकर संयोगवश उसकी भेट उसके पिता के अभिन्न मित्र ध र्मदास से हो गई। इस भेंट के साथ ही उसके भाग्य ने पलटा खाया। धर्मदास वहां के प्रसिद्ध सेठ थे। कई फैक्ट्रिया बनारस में चलती थी। अभी कुछ दिन पूर्व ही उनकी सूगर मिल का व्यवस्थापक काल विलत हो चुका था। अतः उन्हें फैक्ट्रिरी को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए ऐसे व्यक्ति की तलाश थी, जो उनका अत्यन्त विश्वासनीय हो। अतः जब उन्होंने सुना कि यह रोजगार की तलाश में है तो उन्होंने स्वयं ही उस पद हेतु उससे प्रस्ताव किया था तो उसने उनसे निवेदन किया था कि वह इस योग्य नहीं है। उस दिन उन्हें अपने सम्बंघ में सब कुछ बता देना चाहता था किन्तु उसके इस उत्तर को सेठ जी ने केवल मात्र व्यवहारिकता समझकर उसकी बातों को काटते हुए कहा था “यह सोचना मेरा काम है, तुम्हारा नहीं, केवल हां या ना में उत्तर दो।” उस दिन उसने यह सोचकर कि वाद में सब कुछ बता दूंगा जी हां कहकर उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था।

सेठ जी की फैक्टरी में व्यवस्थापक के पद पर कार्य करते हुए उसे तीन वर्ष व्यतीत हो गये थे संयोग की बात थी कि जेलर साहब भी स्थानान्तरित होकर इलाहाबाद से बनारस आ गये। सेठ जी ने जब यह सुना तो उन्होंने जेलर साहब को अपने घर भोजन पर आमन्त्रित किया। वे उनके बचपन के मित्र थे।

“भोजन की मेज पर जब सेठ जी ने उसका परिचय जेलर साहब से कराते हुए जब यहा बतलाया कि राजन उनके वचपन के मित्र हरीश का पुत्र है तो वे फूले नही समाये और लम्बी सांस खीचते हुए बोले–भई धर्मदास तुम बड़े भाग्यशाली हो जो मित्र ऋण से उरिण हो गये। राजन को अपने यहां इतने बड़े विश्वसनीय पद पर रखकर। किन्तु मेरा दुर्भाग्य है जो राजन के इतने सानिध्य में रहते हुए भी अपने को मित्र ऋण से उत्रृण न कर सका।”

“बाबूजी सच्चे अर्थ में तो आप ही मित्र ऋण से उत्रृण हुए है मुझे कारागार जीवन से मुक्ति दिलाकर। राजन ने प्रसन्न होते हुए कहा।”

“वे तुम्हारें संस्कार थे बेटे।”

“नहीं नहीं ऐसा नहीं है बाबूजी मैं कौन हूं ये ना जानते हुए भी आपने मेरे साथ जो पुत्रवत व्यवहार किया था उसी से अभीभूत होकर भयवश में भविष्य में अपराध करने से विरत रहा और इलाहाबाद से बनारस आ गया। यहां मेरी भेंट सेठ जी से हो गई, जिन्होंने बिना कुछ सोचे समझे अपनी फैक्टरी का सारा काम काज मुझे सौंप दिया। आपका स्नेह, रक्षिता की प्रेरणा तथा सेठ जी का मुझ जैसे अपराधी पर अचल विश्वास– इन तीनों के संयोंग से बना है राजन का वर्तमान व्यक्तित्व एवं चरित्र। इन तीनों में से यदि एक का भी अभाव होता तो निश्चय ही आज राजन आपको मिला होता जेल की सलाखों में।”

“ये क्या सुन रहा हूं मैं। कारगार से मुक्ति, अपराधी, राजन” धर्मदास ने लम्बी सांस खींचते हुए बीच में ही गम्भीरता पूर्वक टोका।

“हां सेठ जी मैने आठ बार विभिन्न अपराधों में जेल यात्रायें की है और न जाने कितनी बार और करता यदि बाबू जी और उनकी बेटी रक्षिता की प्रेरणा ने मुझे इन्सान न बना दिया होता।” यह कहते हुए राजन ने मख पर चमक आ गई और वह अपने को कुछ हल्का सा अनुभव करने लगा। “लेकिन तुमने आज तक क्यों नहीं बतलाया मुझे? क्रोधपूर्वक सेठ जी ने

पूछा" "कई बार प्रयास किया था यह सब कुछ बता देने को किन्तु आप ही प्रसंग बदल देते थे। आज अवसर।" "फिर झूठ बोलते हो धोखेबाज, नीच" राजन का वक्तव्य पूरा होने के पूर्व ही धर्मदास चीख पड़ा।

"नहीं ऐसा मत कहो धर्मदास, ऐसे रत्न कम मिलते है। भले को बुरे बनते तो देखे है किन्तु बुरे भले बनते हुए कोई बिरला। बाल्मीक जैसा सुना। राजन यह सब कुछ आज भी छिपा सकता था। किन्तु हाथ आया अवसर भला कैसे जाने देता वह। उसने साफ–साफ बतला दिया।" "धर्मदास को शान्त करते हुए जेलर ने पूरी की पूरी घटना जो कुछ राजन के साथ बीती थी बतला दिया। फिर भी यह अपराधी तो है ही, इसका क्या विश्वास।"

"ठीक है सेठ जी, आप चिन्ता न करे, मेरे जीवन को बनाने में आपका बहुत बड़ा सहयोग रहा है, जिसके लिए धन्यबाद। हां मैं आज ही आपके समक्ष अपनी पद मुक्ति हेतु आवेदन प्रस्तुत कर दूंगा। उसने वे कृत्रज्ञता प्रकट करते हुए कहा।"

"यह ठीक नहीं है धर्मदास जरा शान्ति से काम लो, थोड़ा विचार करो, तीन वर्ष से यह तुम्हारी फैक्टरी में कार्यरत है, तुम्हारी फैक्टरी को क्या हानि पहुचाई इसने? पेट की आग को शान्त करने हेतु अपराधी बना था ये। संगत या संस्कार के कारण नहीं। और जब पेट की ज्वाला शान्त हो गई तो इसने शीघ्रता से मुक्ति पा ली अपराधी जीवन से।" जेलर ने धर्मदास को समझाते हुए दृढ़ता पूर्वक कहा। "ये तो ठीक है कि इसके आने से दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हुई है फैक्टरी की फिर भी लोग।" "लोग क्या कहेंगें। यही न कि सेठ जी ने एक युवक का जीवन बना दिया और तुम्हारे इस सराहनीय कार्य से कारागार के मुक्त हुए अपराधियों को अंगीकार करने की प्रेरणा और साहस प्राप्त होगा।" "हां ठीक कहते है जेलर साहब आप। क्या सभी अपराधी एक तरह से होते है।" धर्मदास ने हताश होते हुए अन्तिम प्रश्न किया।

"विश्व में कौन व्यक्ति ऐसा होगा जो समाज में रहकर अपना सम्मान नहीं चाहेगा। फिर वह समाज चाहे कैसा भी हो? कुछ अफवाह तो हो सकते है किन्तु समाज की उपेक्षा भूख और भावी जीवन के प्रति निराशा का भाव। ये तीन ही ऐसे उपादान है, जो किसी व्यक्ति को अपराध करने की प्रेरणा प्रदान करते है। यह समाज का उत्तरदायित्व है कि वह समाज के प्रत्येक प्राणी को इन तीनों से मुक्त करायें। सर्वत्र शान्ति हो जायेगी। तुम तो पढ़े लिखे हो तुम्हारे पास पर्याप्त साधन है और समाज के दिशा देने में सक्षम भी। सरकार का सहयोग करो धर्मदास।" जेलर ने अत्यन्त विनम्रता से कहा।

"राजन, तुम पद मुक्ति का आवेदन प्रस्तुत नही करोगे। मैंने जो उत्तेजना में तुम्हें अपशब्द कह डाले है उसकी ओर ध्यान न करना ठी है न।"

"इससे क्या पूछते हो। इसे तो अपने चाचा का आदेश मानना ही होगा।" प्रसन्न होते हुए जेलर ने कहा।

"अच्छा ठीक है। गहरी सांस लेते हुए धर्मदास ने कहा।"

"अच्छा भई एक काम मेरा भी है, वादा करों तो कहूं।"

"हां, हां कहिए।"

"मैं भी आज मित्र ऋण से मुक्त होना चाहता हूॅं। क्या सहयोग प्रदान करोगे।"

"क्यों नहीं।"

"तों मैं अपनी एक मात्र बेटी रक्षिता का हाथ तुम्हारे राजन के हाथ में देना चाहता हूॅं। बोलो क्या स्वीकार है।"

"इसका निर्णय तो राजन ही ले सकता है। क्यों बेटे क्या कहते हो।" धर्मदास ने राजन की ओर देखते हुए कहा।

"मैं क्या कहूं बाबूजी।" इतना कहकर राजन मुस्करा दिया।

"अच्छा तो मैं समझू मेरी बेटी की प्रेरणा का दान तुम्हें स्वीकार है।"

"और नहीं तो क्यों ..."

इसके साथ ही कमरें में आनन्द की लहर दौड़ गई....। <u>समाप्त</u>

समय पर मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" अब आपके दरवाजे पर

सदस्यता फार्म

मैं श्री / मि0 / श्रीमती .... पुत्र / पुत्री / पत्नी श्री .... निवासी .... व्यवसाय .... फोन न0 मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज का वार्षिक / द्विवार्षिक / पंचवर्षिय / आजीवन सदस्य बनना चाहता हुॅं। इस हेतु रुपये .... मात्र शब्दों में ...... नकद / डीडी / मनिआर्डर / से भेज रहा हुॅं/ रही हुं। **नोटः** 1. निवासी की जगह पर पत्र व्यवहार का पता ही लिखे। 2. पत्रिका डाक से देर से मिलने पर पत्र के माध्यम से अवश्य सूचित करें। हम आपके लिए दूसरी प्रति भेजने का प्रयास करेंगे।

भारत में: मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु050 / 00, **विदेशों में** (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150.00, **आजीवन सदस्य** : रु0 1100.00 भुगतान का माध्यम चेक / मनीआर्डर / डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20.00 अतिरिक्त राशि देय होगी। कृपया चेक / ड्राफ्ट / मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें।

विज्ञापन प्रबंधकः मासिक पत्रिका "**विश्व स्नेह समाज**", एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

आपकी जुबान

अमेरिका ने क्या दिया ईराकी जनता को?

वास्तव में अमेरिका ने ईराक को कुछ दिया है नहीं बल्कि लिया ही है। ईराक युद्ध ईराकी जनता की जनता की भलाई से कहीं अधिक भलाई जार्ज बुश और अमेरिका ही रही है। अगर ईराकी जनता को देने की बात तो पत्रिका में छपे मुक्ति या भूख, बेरोजगारी और लूटपाट। यहीं दिया है अमेरिका ने ईराकी जनता को।

यह लेख वास्तव में अन्य पत्रिकाओं से हट कर एक निष्पक्ष चितंन एवं मनन किया गया लगता है। इस लेख के बीच में छपा बच्चों का रोता विलखता परिवार देखकर ईराक युद्ध में अमेरिका की क्रुरता को ही अधिक दिखाता है। अगर अमेरिका के दादागिरी पर रोक नहीं लगायी गयी तो वो कल किसी भी देश को अपने स्वहित के लिए अपना शिकार बना सकता है। इनमें पहले मुस्लिम देश ही होगे। पत्रिका में छपे दिल का पैगाम और प्रेरणा का दान कहानी काफी अच्छी लगी।

निजामुद्दीन अंसारी

सोएब अख्तर, मड़ूवाडीह, वाराणसी

प्रसन्नता है कि नियमित प्रकाशन हो रहा है।

परमोदार सुहृद पं0 द्विवेदीजी

सादर हरिस्मरण

आपके कार्यालय परिवर्तन की सूचना से अवगत हुआ। प्रसन्नता है कि 'विश्व स्नेह समाज' का नियमित प्रकाशन हो रहा है। आपके नैनी स्थित कार्यालय में तो मैंने 'अविस्मरणीय' स्तम्भ में अपनी आप बीती घटना लिखकर भेजा था जिसके छपने की सूचना भी आज तक नहीं मिली। न हीं अक प्राप्त हुआ। लम्बे अन्तराल के पश्चात

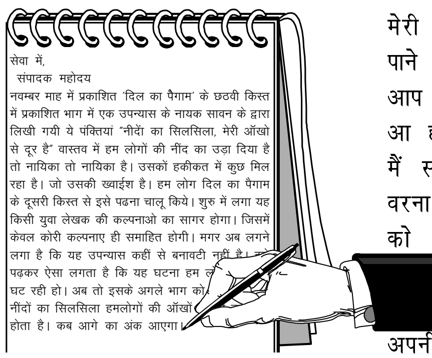

सेवा में,
संपादक महोदय
नवम्बर माह में प्रकाशित 'दिल का पैगाम' के छठवी किस्त में प्रकाशित भाग में एक उपन्यास के नायक सावन के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियां "नीदें का सिलसिला, मेरी ऑखो से दूर है" वास्तव में हम लोगों की नींद का उड़ा दिया है तो नायिका तो नायिका है। उसकों हकीकत में कुछ मिल रहा है। जो उसकी ख्वाईश है। हम लोग दिल का पैगाम के दूसरी किस्त से इसे पढना चालू किये। शुरु में लगा यह किसी युवा लेखक की कल्पनाओ का सागर होगा। जिसमें केवल कोरी कल्पनाए ही समाहित होगी। मगर अब लगने लगा है कि यह उपन्यास कहीं से बनावटी नहीं है। पढ़कर ऐसा लगता है कि यह घटना हम घट रही हो। अब तो इसके अगले भाग को नींदों का सिलसिला हमलोगों की ऑखों होता है। कब आगे का अंक आएगा।

आप ने सेवा हेतु स्मरण किया इसके लिए कृतज्ञ हुॅं। शुभेच्छु

सुरेशचन्द्र शर्मा प्रवक्ता

ग्रा0 पनासा, पो0 पनासा, इलाहाबाद

पढ़कर अच्छा लगा

सेवा में,

श्रीमान सम्पादक महोदय

मैंने आपकी पत्रिका पढ़ी, पढ़कर अच्छा लगा। परन्तु आपके द्वारा लिखित 'दिल का पैगाम' पढ़ने के बाद हमें एक बात नहीं समझ में आई कि आप लड़कियों को ही गलत क्यों मानते है। क्या प्रेम के मामले में सिर्फ लड़कियों की गलती होती है। क्या लड़कियों को गुमराह करने में लड़को का हाथ नहीं होता है।

शालिनी जायसवाल

नैनी, इलाहाबाद

हर बार पढ़ने को बाध्य करता है 'दिल का पैगाम' उपन्यास

मई अंक से धारावाहिक उपन्यास में एक नया अध्याय शुरू हुआ है। बीच-बीच में लेखक ने समाज के कटु सत्यों को उठाने का भरपूर प्रयास किया है। मई अंक में उपन्यास की नायिका द्वारा अपने प्रेमी को उसके परीक्षा में अच्छे अंक लाने को प्रेरित करना-'सावन, आप ही मेरी जिन्दगी हो। आपके अच्छे मार्क्स पाने से ही हमारे प्यार की जीत होगी। आप आज तक प्रत्येक क्षेत्र में चमकते आ हो, आगे भी चमकते रहना, तभी मैं समझुंगी कि मेरा प्यार सच्चा है, वरना...' एक सच्चे प्यार की मिसाल को ही ब्यां करता है। प्यार अगर हो तो उसे अपने प्रेमी-प्रेमिका आगे बढ़ना ही अपना प्यार और अपनी जीत महसूस होती है। नायिका एक तरफ तो सावन दृढ़ता के साथ मिलने के लिए मना करना, तो दूसरी तरफ मंदिर में जाकर उसकी सफलता के लिए प्रार्थना करना, पड़ोसियों से उसकी हाल-चाल लेते रहना कितना सुखद और रमणीक एहसास कराता है। पत्रिका में वैसे भी दिन दुना रात चौगुना सुधार हो रहा है। इसमें सम्पादक महोदय का लगन एवं कर्मठता झलकती है। जो बहुत छोटे स्तर से निकालते हुए आज एक पटरी पर चलने तक पहुॅंचाए है। इसके लिए पत्रिका परिवार को भी बधाई।

मीनू तिवारी, अंजली शर्मा, रेखा श्रीवास्तव,पूनम शर्मा एवं सहेलिया

वोमेन्स हास्टल, इलाहाबाद

विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

पाठकों से अनुरोध

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनकों पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है। **संपादक**

बेबाक

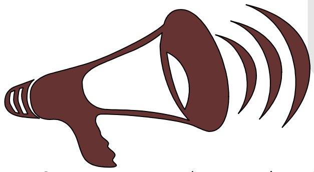

जिहादी आतंकाद से भारत और अमेरिका की सुरक्षा को खतरा है।

लालकृष्ण आडवाणी
उप प्रधानमंत्री, भारत

मायावती ने दलितों की जिंदगी दबंगो के हवाले की। **आर.के.चौधरी**
अध्यक्ष, वी.एस.–4

अयोध्या मसले पर शंकरचार्य के प्रयासों में दम है। **स्वामी चिन्मयानंद**
केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री

आउटसोर्सिंग के खिलाफ अमेरिकी विधेयक राजनीति से प्रेरित।

सोम मित्तल
चेयरमैन, नासकाम

बापू! राममंदिर के लिए भी कुछ कीजिए
अशोक सिंहल
कार्यकारी अध्यक्ष, विहिप

अटल के साथ जल्द बैठक के आसार नहीं। **मीर जफरूल्लाह खान जमाली**
प्रधानमंत्री, पाकिस्तान

बसपा के किसी विधायक के टूटने का खतरा नहीं है लेकिन भारतीय जनता पार्टी को अपने विधायकों पर नजर रखनी होगी।
सुश्री मायावती
मुख्यमंत्री, उ0प्र0

उत्तर प्रदेश में गठबंधन के संबंध में अभी कोई निर्णय नहीं हुआ है।

सलमान खुर्शीद
अध्यक्ष, समन्वय एवं नीतिनिर्धारण समिती,कांग्रेस

अयोध्या के पेंचीदा मसले को सुलझाने के लिए हम वाजिब प्रस्ताव पर विचार करने के लिए तैयार है। **मौलाना रावे हसन नदवी**
अध्यक्ष,
ऑल इंडिया मुसलिम पर्सनल लॉ बोर्ड

लोकसभा से पहले प्रदेश में विधानसभा का मध्यावधि चुनाव हो सकते हैं।
विनय कटियार
प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा, उ0प्र0

पाक से वार्ता का प्रस्ताव अमेरिकी दवाब में नहीं लिया गया। **कमल सिब्बल**
विदेश सचिव, भारत

केन्द्र में गठबंधन सरकार एक वास्तविकता बन गई है और कांग्रेस को इसे स्वीकार करना होगा। **अर्जुन सिंह**
वरिष्ठ नेता, कांग्रेस

पाकिस्तान से जल्द वार्ता की उम्मीद नहीं। **जॉर्ज फर्नाडिज**
रक्षा मंत्री, भारत

वीसीसीआई का काई भी पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारी के प्रति कभी भी गंभीर नहीं रहा है। यही वजह है कि संभावनाओं के बावजूद भारतीय क्रिकेट टीम सर्वोच्च प्रदर्शन नहीं दे पाती।
नवजोत सिंह सिद्धू
पूर्व क्रिकेटर

राज्यों को मुफ्त बिजली नहीं दी जाएगी।
अटल बिहारी वाजपेयी
प्रधानमंत्री

रालोद के कई विधायक मेरे समर्थन में है।
सपरपाल सिंह
बागी विधायक, रालोद

राजनीति में विश्वसनीयता का संकट पैदा हो गया है। **ओम प्रकाश सिंह**
सिचाई मंत्री, उ0प्र0

वार्ता के लिए आतंकवाद पर रोक जरूरी है। **यशवंत सिंह**
विदेश मंत्री, भारत

कुछ अमेरिकी राज्यों द्वारा विकासशील देशों के खिलाफ उठाया गया कदम चिताजनक है। **अरूण जेटली**
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, भारत

अजित सिंह अपने कर्मो के कारण केंद्रीय मंत्रीमंडल से हटना पड़ा।
डॉ0 मुरली मनोहर जोशी,
केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री

चीनी मिले गन्ने का भुगतान करने में सक्षम है।
राजनाथ सिंह,
केंद्रीय कृषि मंत्री

संगठन, संघर्ष व सत्ता मेरी प्राथमिकता होगी।
जगदंबिका पाल
नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष,
कांग्रस,उ0प्र0

बधाई हो

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि के जन्मदिन/शादी शादी वर्षगांठ/ होली/ परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 50.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 75.00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

इग्नू द्वारा संचालित : एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल

एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस :** टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करेः

एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,
कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

शाखाः एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

प्रवेश प्रारम्भ प्रवेश प्रारम्भ Phone: 2500166

प्रभा विद्या मंदिर

सर्वोदय नगर, अल्लापुर, इलाहबाद

(हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्याम)

अनुभवी अध्यापकों द्वारा शिक्षा की उत्तम व्यवस्था

प्रधानाचार्या
श्रीमती शोभा मलिक

फोनः2448306

आर.ए. मेमोरियल जूनियर हाईस्कूल

(हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्याम)

कम से कम शुल्क

प्रबंधक
श्री नन्दलाल यादवं

प्रधानाचार्या
श्रीमती विशाखा यादव

ज्योतिष संबंधी

आदिशक्ति उपासक ज्योतिषाचार्य

प्रेमविवाह, नौकरी, व्यवसाय, बरकत, कर्ज, संतति, गृहकलेश, मानसिक बाधा, करनी, तलाक, पदोन्नति, कोर्ट, शनि पीड़ा, राजनीतिक, वास्तुदोष, शिक्षा, शत्रुमुक्ति, विदेश, विवाह, हस्तरेखा कुण्डलीविद

शुक्ला जी, म.न. 1041, बाबाबाग आर.के. कोचिंग सेन्टर गली के अन्दर, समीप बलुआघाट चौराहा, इलाहाबाद समयः 8 से 8 बजे तक

3 दिन में फरक न पड़े तो पैसे वापस।

सुखी वैवाहिक जीवन

मर्दाना कमजोरी तथा गुप्त रोगों का इलाज बिजली एवं दवाइयों द्वारा

परीक्षा फीस रू0 100/— मात्र, इलाज की फीस रोग के अनुसार

समयः प्रात : 10 से 1 सायं 5.00 से 7.30

डॉ. दीवान हरबंश सिंह क्लीनिक

3, शिवचरन लाल रोड (विश्वम्भर सिनेमा के सामने), इलाहाबाद फोन. 2401076

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक पत्रिका

Mobile:3155949, 2552444 Fax: 0532-655565

विशेषांक की अतिथि संपादक : योगमाया रीता मिश्र हमारा आगामी अंक सितम्बर 03 का

पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक

विशेषांक की अतिथि संपादक : योगमाया रीता मिश्र

☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की संस्कृति राजधानी रहा है ☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की राजनीतिक राजधानी रहा है

☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की साहित्यिक राजधानी रहा है

☞ साहित्य और पत्रकारिता का दूध जल–सा सम्बंध है, दोनों एक दूसरे पर आश्रित है। अपने स्वरूप के लिए, अपने विकास के लिए, हम पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक के माध्यम से

☞ तीर्थराज प्रयाग की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ☞ तीर्थराज प्रयाग की राजनीतिक पृष्ठभूमि

☞ तीर्थराज प्रयाग की साहित्यिक पृष्ठभूमि के साथ

प्रयाग की पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास और प्रयाग के इतिहास प्रसिद्ध शीर्षस्थ पत्रकारों सहित वर्तमान अधुनातन पीढ़ी के कर्मठ युवा पत्रकारों की प्रामाणिक जानकारी तथा प्रयाग के जनसंचार माध्यमों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस आशा और विश्वास के साथ–

कि ☞ आप तन–मन–धन से ☞ विचारों और विज्ञापनों से ☞ अपने अमूल्य सुझावों से

हमें अविलम्ब अवगत कराने की कृपा करेंगे। तथा

तीर्थराज प्रयाग के पत्रकारों और प्रयाग की ऐतिहासिक पत्रकारिता के प्रति अपनी दृढ़ आस्था का परिचय प्रकट करके तीर्थराज प्रयाग की संस्कृति/राजनीति/पत्रकारिता एवं साहित्यकता को सादर अपना प्रणाम निवेदन करेंगे।

सम्पर्क सूत्र :

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	**डॉ0 कुसुमलता मिश्रा**	**रजनीश तिवारी**	**मधुकर मिश्र**
प्रधान संपादक	कार्यकारी संपादक	सहायक संपादक	संयुक्त संपादक

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',

एल.आई.जी–93, नीम सराय, कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ0प्र0,

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, पीपलगांव, इलाहबाद, उ0प्र0 भारत

विशेषांक विज्ञापन दरें निम्न है–

रंगीन कवर पृष्ठ

1.	अंतिम पृष्ठ (फुल पेज)	7000/–
2.	मुख्य पृष्ठ अन्दर की तरफ (फुल पेज)	6000/–
3.	अंतिम पृष्ठ अन्दर की तरफ (फुल पेज)	5000/–
4.	सेन्ट्रल स्प्रेड (स्वेत/श्याम)	4000/–
5.	सामान्य फुल पेज	2000/–
6.	आधा पृष्ठ	1000/–
7.	शुभकामना संदेश	500/–

प्रजनन एवं बाल स्वास्थ्य
(आर0सी0एच0) कार्यक्रम

के अन्तर्गत दी जाने वाली सेवायें:–

जनपद के समस्त सामुदायिक/प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर निर्धारित दिवसों को आयोजित होने वाले आर0सी0एच0 शिविरों में निम्न सेवायें निःशुल्क दी जाती है।

1. गर्भवती महिलाओं की जॉच
2. मॉ बच्चें के स्वास्थ्य मशवरा व सेवायें
3. गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण
4. परिवार नियोजन सलाह मशवरा व सेवायें
5. बच्चों को 6 जानलेवा बीमारियों से बचाव हेतु टीकाकरण
6. पुरूष एवं महिला नसबन्दी
7. महिला चिकित्सक की सेवायें
8. यौन जनित रोगों, प्रजनन तंत्र संक्रमण का चिकित्सक द्वारा जॉच व उपचार

आप अपने मित्रों व सगे सम्बन्धियों को डाक्टरों के विशेष दल से जरूर मिलायें, अवसर का लाभ उठायें।

डा0 दिवाकर प्रसाद
कार्यक्रम अधिकारी (आर0सी0एच0)
इलाहाबाद

डा0 एस0पी0राम
मुख्य चिकित्सा अधिकारी
इलाहाबाद

Phone: 2640452

CHANDRA ENTERPRISES

78/1, Gunesh Nagar, Maurabad, Allahabad

Suppler's of Hand Pump & Spare Parts

मात्र 30,000/– में उपलब्ध

पागल आटो रिक्शे का मिजाज
पागल बेरोजगारों का इलाज

शानदार फाइनेन्स

विशेषताएं

- कम्पनी निर्मित बाडी
- आधुनिक एवं सुंदर
- रख–रखाव में आसान
- कम खर्च
- एक लीटर 25 किमी0
- आराम दायक सफर
- गाड़िया स्टाक रहने तक

योजना सीमित अवधि के लिए

खर्च कम, अधिक कमाई, बेहतर सौदा

डीलर: **मे0 रोहन आटो मोबाइल्स**

बैद्यनाथ कम्पनी के सामने, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद ☎696683, 697518 **ब्रान्च आफिसः** मामा भांजा का तालाब, पुलिस चौकी, रीवां रोड, इलाहाबाद ☎696683 वर्कशापः 93/4, लेबर कॉलोनी, पीएसी के पास, नैनी, इलाहाबाद ☎697518